@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

# माही संदेश

मैं कतरा हो के
तूफानों से जंग लड़ता हूं
मुझे बचाना
समंदर की जिम्मेदारी है
दुआ करो कि
सलामत रहे मेरी हिम्मत
ये एक चराग़
कई आँधियों पे भारी है

वसीम बरेलवी

वर्ष : 1 अंक : 11 फरवरी : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

## अंदर पढ़ें

दुश्वारियां देखो मैं तुमसे
कितना बड़ा हूं- अवनींद्र मान

जीती राज. विश्वविद्यालय की
छात्रशक्ति- विनोद जाखड़

'फिर वो ही दिल लाया हूं'
-जॉय मुकर्जी

# उम्र छोटी है उपलब्धियां नहीं

# पूजा यादव

**जब सपने मेहनत और लगन के साथ देखे जाते हैं तो वो सार्थक रूप में सामने आने लगते हैं, पूजा यादव के सपने ऐसे ही हैं जिनमें मेहनत और आगे बढ़ने की चाह नजर आती है, आज पूजा बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ के अभियान को अपनी सफलता से साकार कर रही हैं।**

**माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन से पूजा यादव की विशेष बातचीत...**

पूजा यादव एक बेहतरीन मॉडल और एक ऐसी शख्स है जो बचपन से अपनी आंखों में अपने सपनों को लेकर चली और आगे बढ़ती रही। पूजा का कहना है कि सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं और मेरे जीवन में भी कई उतार-चढ़ाव आए लेकिन मेरी आंखों में अपना सपना पूरा करने की चाहत थी और कड़ी मेहनत करने के बाद इस मुकाम को हासिल किया। रैंप वॉक की शौकीन पूजा को हील पहनना बहुत अच्छा लगता है, पूजा कहती हैं कि मेरे लिए वही फैशन है जो मैं पहनती हूं, हर वर्ष पूजा गरीब बच्चों की शिक्षा से जुड़ा सामान उनमें वितरित करती हैं।

## सपनों की शुरुआत...

सैन्य परिवार से संबंध रखने वाली पूजा यादव का जन्म बैंगलूर में हुआ, पूजा यादव के पिता इंद्रजीत यादव भारतीय वायु सेना में कार्यरत थे जो हाल ही में सेवानिवृत्त हुए हैं। केन्द्रीय विद्यालय से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने वाली पूजा यादव बताती हैं कि डिफेंस पृष्ठभूमि के कारण पिता के अक्सर तबादले होते रहते थे जिसके कारण देश भर को जानने और रहने का अवसर मिला। दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्री कॉलेज से ग्रेजुएशन की, अभी वर्तमान में हरियाणा के फरूखनगर स्थित ऑक्सफोर्ड कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी से बी.एड कर रही हैं। पूजा की शादी कानपुर (पन्की) के रहने वाले केप्टन अभिषेक यादव से हुई है। पूजा यादव ने जब अपने मॉडलिंग व एक्टिंग के सपने के बारे में पति अभिषेक कुमार को बताया तो उन्होंने कहा कि वह उनके हर कदम पर उनके साथ हैं। **शेष पृष्ठ 5 पर**

## माही संदेश ( राष्ट्रीय पत्रिका )

**संस्थापक** डॉ. मदनलाल शर्मा*

v v v

**प्रधान संपादक** रोहित कृष्ण नंदन **(98874-09303)**

v v v

**प्रबंध निदेशक** डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

v v v

**सह-संपादक** डॉ. महेश चन्द*
नित्या शुक्ला*
मधु गुप्ता*
दीपक आजाद*
नीरा जैन*

v v v

**आईटी सलाहकार** सोनू श्रीवास्तव*

v v v

**ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)** रमन सैनी* **9717039404**

v v v

**संवाददाता** ईशा चौधरी*
दीपक कृष्ण नंदन*
श्री राम शर्मा*
विनोद चौधरी*

v v v

**अकादमिक सलाहकार** डॉ. सुधीर सोनी*

v v v

**बिजनेस हैड** अनुराग सोनी* **9828198745**

v v v

**मार्केटिंग सलाहकार** राजेन्द्र कुमार शर्मा*
अनिल शर्मा*

v v v

**मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव** रिंकी सैनी*
अजय शर्मा **(8368443640)**

v v v

**परामर्श समिति**

डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

v v v

**संरक्षक मंडल** रामेश्वरी देवी*

v v v

**डिजाइनिंग** सागर कम्प्यूटर 79765-17072

v v v

**मुद्रण** कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

**पृष्ठ संख्या** : 32 आवरण सहित
**प्रकाशन तिथि** : प्रत्येक माह की 01 तारीख

**: कार्यालय :**

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

**ई-मेल :**

mahisandesh31@gmail.com

**मोबाइल :** 9887409303


पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

# जनता को समर्थ बनाएं अपाहिज नहीं

**रोहित कृष्ण नंदन**
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

26 **जनवरी**-गणतंत्र दिवस का पर्व देश ने मनाया, देश हित में कई बातें की गईं, राजनेताओं द्वारा कई वादे फिर से भविष्य के लिए तय किए गए। देश की राजनीति इन दिनों उफान पर है, चुनावी मौसम जो है, मगर जनता का तो वही हाल है चाहे मौसम कोई भी हो, युवा बेरोजगार बनकर हताश हैं तो सत्ता पक्ष उन्हें बेरोजगारी भत्ता देकर रिझाने की कोशिश में लगा हुआ है, यह बेरोजगारी का हल नहीं है, किसान को लोन माफ करने का लॉलीपॉप दिया जाता है, लेकिन लोन माफी भी किसान की गरीबी का हल नहीं है, हल है युवा बेरोजगार को समर्थ और किसान को सक्षम बनाया जाए, ऐसी योजना व रणनीति हो कि जो जनता के हर वर्ग को समर्थ बनाने का काम करे न कि उन्हें बेरोजगारी और लोन माफी की बैसाखी देकर उम्र भर के लिए अपाहिज बनाकर छोड़ दे, आप सरकार में हैं तो सरकार जैसा काम करने की जिम्मेदारी आपकी है, जनता ने आपको जनहित में चुना है निज हित में नहीं.....

शेष फिर.....

# एक नजर यहां भी


**नारी संदेश**
सेना के साथ हर पल एक नया अनुभव — **तनिमा तिवारी** 6

**सेहत संदेश**
होम्योपैथिक द्वारा स्वाइन फ्लू से बचाव व उपचार — **डॉ. चित्रलेखा तिवाड़ी** 7, **डॉ. मुकेश सोलंकी**

**जरूरी बात**
भारत में बेरोजगारी के कारण व निवारण — **अरविंद पाण्डेय** 8

**जीवन संदेश**
दुश्वारियां देखो मैं तुमसे कितना बड़ा हूं अवनींद्र मान — **रोहित कृष्ण नंदन** 10

**युवा-शक्ति**
जीती राजस्थान विश्वविद्यालय की छात्रशक्ति- विनोद जाखड़ — **विनोद चौधरी** 12

**लक्ष्य**
राजस्थान प्रशासनिक सेवाः सामान्य परिचय — **राजेश कुमावत** 14

**मन की बात**
पापा की खुशबू लौट कर आयी (भाग- 2) — **नवीन जैन** (IAS) 16

**समाज संदेश**
शहीद लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त मार्ग का उद्घाटन 18

**काव्य-कलम** 19

**कथा-संदेश**
गिरगिटों की बस्ती — **शिशिर कृष्ण शर्मा** 20

**उपन्यास**
उड़ती चील का अण्डा — **डॉ. मदन लाल शर्मा** 24

**गतिविधियां**
युवा कवियों का सुमधुर देश राग 25
'काव्या' काव्य संध्या एवं साहित्यकार पत्रकार सम्मान समारोह आयोजित 26

**सिनेमा संदेश**
'फिर वो ही दिल लाया हूं' जॉय मुकर्जी — **शिशिर कृष्ण शर्मा** 28


**आवरण चित्र-अरुण मजूमदार***
बहुप्रतिष्ठित कंपनी में अस्सिस्टेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। पिछले नौ वर्ष से शौकिया रूप से फोटोग्राफी कर रहे हैं।

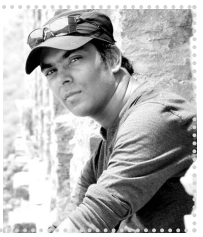

## पाठक संदेश

**माही** संदेश के हर अंक की प्रतीक्षा रहती है, जब से इस पत्रिका को पढ़ना आरंभ किया है तब से यह एक परिवार के सदस्य रूप में स्थान बना चुकी है, जनवरी अंक में नवीन जैन जी द्वारा लिखी पापा की खुशबू लौटकर आई दिल को छू गई, जय जवान में राजेश सोनी जी का साक्षात्कार बढ़िया लगा, पकंज चतुर्वेदी जी ने मोमबत्ती की ऊष्मा वहां तक क्यों नहीं पहुंचती से समाज का सच लिखा है, शिशिर कृष्ण शर्मा जी द्वारा नक्श लायलपुरी के बारे में पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। माही संदेश पत्रिका के सभी स्तंभ बहुत बढ़िया व ज्ञानवर्धक हैं।

**पूजा राठौड** *रतलाम, मध्य प्रदेश*

**जनवरी अंक में** युवा कलाकार दीपाली शर्मा से परिचय अच्छा रहा, व नई सरकार से जनता की उम्मीदें सटीक बात कह गईं। नित्या शुक्ला द्वारा भारतीय सेना दिवस के बारे में पढ़कर सेना से परिचय और गहरा हो गया। आपसे अनुरोध है कि फिल्म समीक्षा भी हर अंक में शामिल की जाएं। **अभिषेक जैन** जयपुर


## वैवाहिक विज्ञापन

अंगिरस गौत्र फिल्म एवं फैशन प्रोफेशनल 28/5"6 बड़े और 25/5"5 छोटे भाइयों के लिए स्कॉलर या सेवारत आध्यात्मिक उन्नति की इच्छुक समंवय की वधुएं अपेक्षित हैं। विज्ञापन केवल बेहतर चुनाव के लिए और बच्चियां जो खुद रुहानियत से वाकिफ हों, संरक्षकों के मार्फत या स्वयं संपर्क करें या ईमेल द्वारा मैट्रिमोनियल रिजूमे भेजें ।

**royalensign105@gmail.com**
**or call me anyday 7877756814**

क्रमशः पृष्ठ 2 से

# उम्र छोटी है उपलब्धियां नहीं

अपने पैतृक गांव अलावलपुर, बावल, रेवाड़ी से संबंध रखने वाली पूजा यादव कहती हैं कि बचपन के दिनों में जब टीवी देखती थी तो एक ही सपना निगाहों में रहता था कि मुझे टीवी पर आना है, फैशन के क्षेत्र में जाना है, कॉलेज में फैशन सोसायटी को जॉइन किया जिसके अंदर गर्ल्स को मॉडलिंग कराई जाती है, शादी के दो महीने बाद 'मिस एंड मिसेज इंडिया इलीट 2018' के लिए ऑडिशन दिया जिसमें तकरीबन 8000 लड़कियों/ महिलाओं ने ऑडिशन दिए थे, कई प्रतियोगिताओं के बाद टॉप 3 लड़कियां चुनी गईं। इस प्रतियोगिता के अंदर चुनी गईं प्रतिभागी जून 2019 में लंदन में आयोजित मिसेज वर्ल्ड प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगी।

## सपनों को मिली दिशा

गुड़गांव में संचालित एनजीओ युवा शक्ति संगठन, जिसमें गरीब बच्चों को फ्री में एजुकेशन सिलाई कम्प्यूटर क्लास दी जाती है वहां का पूजा को ब्रांड एंबेसडर बनाया गया। पूजा ने बताया कि भविष्य में बॉलीवुड में काम करने की योजना है। अभी मुख्य फोकस इवेंट पर है।

## समाज सेवा में भी हैं सक्रिय

ब्रेस्ट कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम संचालित करने वाली पूजा यादव समाज सेवा से जुड़े कार्यों में भी पूर्ण रूप से सक्रिय रहकर अपनी भूमिका निभाती हैं। 23 वर्षीय पूजा कहती हैं कि मेरी सफलता के पीछे मेरे पति अभिषेक कुमार की बहुत बड़ी भूमिका है, उनका व ससुराल पक्ष का सपोर्टिंग नेचर मुझमें उत्साह का संचार करता है। मुझे देखकर समाज की अन्य महिलाएं जागृत हुई हैं कि ये कर सकती है तो हम भी कर सकते हैं। मेरे पिता इंद्रजीत यादव, मां बबीता यादव का आशीर्वाद व भाई विकास यादव का स्नेह मेरी हिम्मत है।

## कई खिताब हैं पूजा के नाम

***रैंप वॉक,*** *एक्टिंग, बास्केटबॉल खेलना आदि पसंद हैं। स्कूल के दिनों में बेस्ट एथलीट थी। पूजा मिसेज इंडिया राइजिंग का खिताब अपने नाम कर चुकी हैं, इससे पहले वो मिसेज इंडिया सब टाइटल का अवॉर्ड प्राप्त कर चुकी हैं। वर्ष 2017 में ऑक्सफोर्ड कॉलेज ऑफ एजुकेशन में मिस फ्रेशर रह चुकी हैं। पूजा को मिसेज इंडिया 2018 सेकंड रनरअप का क्राउन मिला, इसके साथ ही मिसेज इंडिया गोवा का ताज भी पूजा को मिला, इसी समारोह में पूजा को मिसेज इंडिया पॉपुलर 2018 व मिसेज इंडिया एक्टिव 2018 का खिताब मिला।*

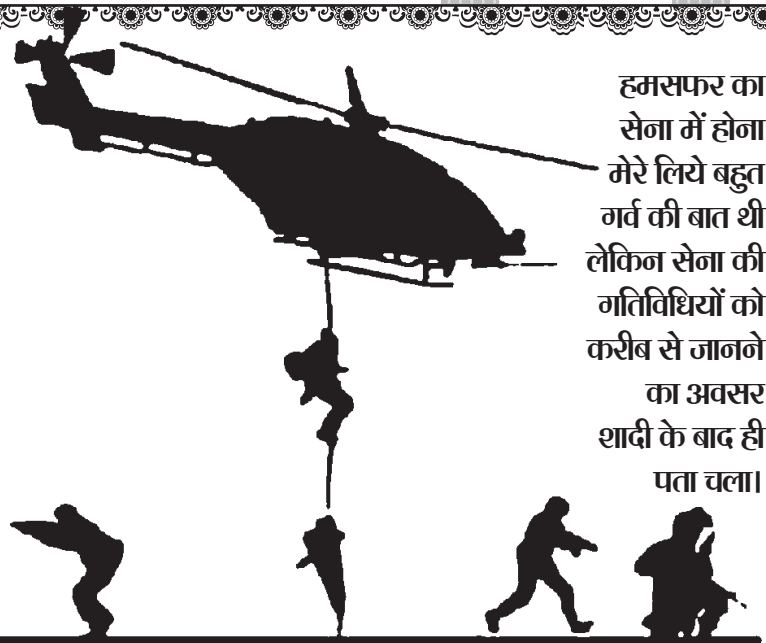

**हमसफर का सेना में होना मेरे लिये बहुत गर्व की बात थी लेकिन सेना की गतिविधियों को करीब से जानने का अवसर शादी के बाद ही पता चला।**

# सेना के साथ हर पल एक नया अनुभव

**तनिमा तिवारी**
*जयपुर*

'बेटा कोई बात नहीं शादी तलवार रखकर कर देंगें', शादी होने से बारह दिन पहले पापा का इस तरह कहना मुझे कुछ अलग हट कर लग रहा था।

क्योंकि मैं इस नयी जिन्दगी के बारे में कुछ भिन्न तरीके से सोच रही थी जिसमें सिर्फ धूमधाम से शादी, नये कपड़े और जवाहरात, सुंदर सा घर जिसको सजाने के लिये क्या-क्या खरीदना है एवं यात्रा आदि ख्वाबों से भरी हुयी मेरी दुनिया थी।

पापा का ऐसा कहना भी ठीक था क्योंकि जहां पर पूरा परिवार शादी की तैयारी में व्यस्त था वहीं पर मेरे होने वाले पति को छुट्टी मिलती है या नहीं यह निश्चित नहीं था।

मुझे जब यह पता चला, मैं बहुत चिंतित हो उठी और पापा से पूछा कि 'रिश्तेदारों को निमंत्रण जा चुके हैं एवं सभी तैयारी लगभग पूरी हो गयी है' अगर छुट्टी नहीं मिलती तो क्या होगा?

पापा का तलवार से शादी का कहना एक तरीके से सच्चाई से परिचय कराना था जो कि संदेश दे रहा था कि देश का कार्य सबसे पहले आता है।

हमसफर का सेना में होना मेरे लिये बहुत गर्व की बात थी लेकिन सेना की गतिविधियों को करीब से जानने का अवसर शादी के बाद ही पता चला। कुछ चंद दिन साथ रहने के बाद पति को अपनी फील्ड पोस्टिंग पर जाना था।

उनका इतना जल्दी जाना अच्छा नहीं लग रहा था लेकिन पति के समझाने पर मुझे धीरे-धीरे पता लग चुका था कि देश के लिये समर्पित होने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। पत्र और टेलीफोन के सहारे दिन कैसे बीत गये यह पता भी न चला, फिर तबादला होने पर पति के साथ ही केन्टोनमेंट में रहने का मौका मिला।

कभी ट्रेनिंग कभी एक्सरसाइज या फिर कोर्स पर उनको जाना पड़ता था। इस कारण मुझे कई बार अकेला रहना पड़ा लेकिन सेना की तरफ से इतना सहयोग मिलता था कि आधी परेशानियों का सामना ही नहीं किया और आधी परेशानियां हंसते-हंसते पार कर लेती थी और करे भी क्यों न? यह जज़्बा सेना ने जो दिया था। अपने आप को मैं बहुत भाग्यशाली समझती हूं कि मैं भी पति की वजह से सेना से जुड़ी हुयी हूं। अगर देखा जाये तो सेना ने अभी तक बहुत कुछ दिया है। पोस्टिंग के दौरान नयी-नयी जगह देखने को मिली, हर जगह अशियाना बनाने के साथ दोस्त भी बनायें।

पति के सहयोग से सेना द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने पर नये विषयों पर जानकारियां प्राप्त हुयी एवं अपने अंदर छिपी प्रतिभा को पहचाना। यहां मेरी एक अलग पहचान बनी ऐसा लगता है कि जैसे मेरा दूसरा जन्म हुआ है।

अब मुझे तलवार से शादी होने का मतलब समझ आता है कि इसे कहकर पापा ने मेरे अंदर एक हिम्मत और साहस का संचार किया जिसे मैं हर पल महसूस करती हूं और आशा करती हूं कि पति इसी तरह देश की सेवा करते रहें और मैं अपने जीवन को सेना के अनुभवों से उज्जवल बनाती रहूं। मेरे मन से हमेशा पति के लिये कुछ शब्द इस प्रकार से निकलते हैं-

*तू कभी ठहर मत,*
*इस डगर चला चल,*
*रास्ते कठिन सही,*
*पर मंजिलें हसीन है।*
*जय हिन्द*

## होम्योपैथिक द्वारा

# स्वाइन फ्लू से बचाव व उपचार

स्वाइन फ्लू **एच-1 एन-1** वायरस जनित संक्रामक रोग हैं। वर्तमान स्थिति में स्वाइन फ्लू पॉजिटिव व मौत के मामलों में राजस्थान पहले नंबर पर हैं। यह एक मौसमी बीमारी हैं जो लाइलाज नहीं हैं। अत: इससे भयभीत ना हों। थोड़ी सी सावधानी व समय पर उपचार लेने से यह पूर्णतया ठीक हो जाती है।

### कैसे फैलता है

जब एक स्वस्थ्य व्यक्ति किसी संक्रमित व्यक्ति, स्थान, हवा आदि के संपर्क में आता हैं तो यह वायरस उस व्यक्ति में प्रवेश कर जाता हैं एवं कुछ घंटे या एक- दो दिनों में इसके लक्षण आना शुरू हो जाते हैं।

### यह बीमारी क्या है?

इस बीमारी में वायरस नाक, गले एवं फेफड़ों की कोशिकाओं को सामान्य फ्लू वायरस के समान ही प्रभावित करता हैं परन्तु लापरवाही एवम् इलाज में होने वाली देरी ही इस रोग के बढ़ने का कारण बनती हैं।

### लक्षण

- नाक बहना, छींक आना, नाक बंद होना।
- मांसपेशियों में दर्द या अकड़न।
- सिर में तेज दर्द।
- कफ और कोल्ड, लगातार खांसी, गले में खराश।
- बहुत ज्यादा थकान महसूस होना।
- दवा खाने के बाद भी बुखार का बढ़ना।

### स्वाइन फ्लू से बचाव

- छींकते, खांसते समय रुमाल से मुंह ढंकें।
- भीड़, भाड़ वाली जगह से बचें।
- बार बार साबुन से हाथ धोयें। खूब पानी पीयें।
- अपने रहने के स्थान को हवादार बनाये रखें।
- संक्रमित व्यक्ति से हाथ ना मिलायें।
- गंदगी भरे स्थान पर ना जायें।
- घर में किसी को फ्लू के लक्षण हों तो उसे स्कूल अथवा कार्य स्थल पर ना भेजें।
- लक्षण दिखने पर डॉक्टर से मिलें।
- इस्तेमाल किया हुआ मास्क- टिशू पेपर डस्टबिन में डालें।

### होम्योपैथिक उपचार व बचाव

केंद्रीय होम्योपैथी अनुसन्धान परिषद् द्वारा स्वाइन फ्लू से बचाव हेतू rsenic album 30 भूखे पेट लगातार 3 दिन तक लें और अगर संक्रमण की स्थिति चल रही हो तो 1 महीने बाद दुबारा ये प्रक्रिया दोहरा लें।

उपचार हेतु होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में लक्षणों के आधार पर औषधियों का चयन किया जाता है। जिसमें Influenzinum, Aconite, Arsenic Album, Bryonia, Rhus To&, Gelsemium, Nu& Vomica, Merc Sol, Calc Iod, Eupatorium Perf., आदि औषधियां कारगर हैं, परन्तु इनका उपयोग कुशल चिकित्सक की सलाहनुसार ही करें।

### भोजन एवं परहेज

- भरपूर नींद लें।
- जंकफूड, प्रोसेस्ड फूड से बचें।
- धूप का सेवन करें।
- हरी सब्जी, फल, सलाद का अत्याधिक सेवन करें।
- चाय के पानी में अदरक, तुलसी, लॉन्ग, काली मिर्च, जायफल डालकर पियें।
- आंवला, संतरा एवं नींबू (Vit.C) का सेवन करें।

**डॉ. चित्रलेखा तिवाड़ी**
B.H.M.S., M.D.
होम्यौपैथी फिजिशियन, केंद्रीय होम्यौपैथी अनुसंधान परिषद

**डॉ. मुकेश सोलंकी**
B.H.M.S., M.D.
होम्योपैथी फिजिशियन, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (N.I.A.), जयपुर

# भारत में बेरोजगारी के कारण व निवारण

*बेरोजगारी क्यों आयी इस देश में? क्या कारण थे? जब तक ये नहीं समझेंगे इस समस्या का निवारण नहीं समझ पाएंगे। तो आइए इस समस्या का विश्लेषण करें-*

**नौकरी बढ़ाने के लिए सरकार निवेश, खासकर विदेशी निवेश पर जोर दे रही है। लेकिन जब तक व्यापार करने की आसानी नहीं होगी, निवेशक लोगों को निवेश का माहौल नहीं मिलेगा, तब तक निवेशक अपना पैसा यहां नहीं लगाएगा, सरकार भले कितना ही उसको लुभा ले।**

**अरविंद पाण्डेय**
विद्यार्थी- दिल्ली विश्वविद्यालय परास्नातक गणित (M.Sc.)
निवासी-सिद्धार्थ नगर (उत्तरप्रदेश)

**देश में पैदा होने वाली नौकरियों में सरकारी नौकरी का प्रतिशत केवल 1 प्रतिशत है बाकी 99 प्रतिशत प्राइवेट नौकरी हैं।**

आजादी के बाद, पंडित जवाहर लाल नेहरू ने चीन और रूस जैसे देशों की नकल करते हुए, समाजवाद व्यवस्था अपनायी, जिसमें सरकार उद्योग चलाती है, निजी उद्योगों को खड़ा करने के लिए बहुत मुश्किल से अनुमति देती है (लाइसेंस राज), जमीन पर मालिकाना हक उसके स्वामी का ही होता है, वगैरह-वगैरह।

लेकिन ये व्यवस्था गरीब को बस दो वक्त की रोटी देने लायक ही थी। उसको रोजगार देना, गरीबी रेखा से बाहर निकाल देना, समाजवाद के बस की बात नहीं थी। उसके लिए प्रभावी औद्योगिकीकरण, खुली बाजार अर्थव्यवस्था इत्यादि की जरूरत थी।

चीन ने इस बात को समझा और चूंकि वहां लोकतंत्र नहीं है, उसने अपनी नीतियों में बड़ी आसानी से बदलाव कर दिए। श्रमिक सुधार, भूमि सुधार, लाइसेंस परमिट का सरलीकरण इत्यादि वहां कुछ सालों में ही हो गया। वहां के महान नेता माओ जेदोंग को इसका विरोध भी झेलना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपना काम जारी रखा। इसका नतीजा यह हुआ कि अस्सी के दौर में जब वैश्वीकरण आया तो चीन उसका फायदा उठाने के लिए पूरी तरह से तैयार था।

लेकिन भारत पीछे रह गया। यहां के नेता लोग अपनी सरकार, अपनी कुर्सी बचाने में ही लगे रहे, और जब अर्थव्यवस्था सुधार करने के साहसिक प्रयास की जरूरत थी तब कुछ नहीं किया। उनकी आंखें खुली 1991 में, जब देश में समाजवाद की नीति के चलते पैसे की भुगतान में गंभीर समस्या आ गया। ये वो समय था, जब भारतीय रिजर्व बैंक को विदेशी बैंकों में देश का सोना गिरवी रखना पड़ा था, देश चलाने के लिए कुछ पैसों का जुगाड़ करने के लिए।यहां तक डॉलर के मुकाबले रुपए के ताकत को भी कम करना पड़ा।

उसके बाद देश में (एलपीजी सुधार) उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण का दौर आया लेकिन देर तो हो ही चुकी थी। और इस देरी का खामियाजा देश ने भुगतना शुरू कर दिया था।

एलपीजी सुधार के साथ समस्या ये है कि इसने देश को कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से सीधे सेवा आधारित अर्थव्यवस्था बना दिया। बीच में औद्योगिक आधारित अर्थव्यवस्था कभी देश बना ही नहीं। सेवा क्षेत्र में जब स्वचालन, मंदी इत्यादि आने लगी, तो लोगों के पास विकल्प के तौर पर कुछ था ही नहीं। कई विकसित देशों में कृषि-उद्योग-सेवा का ट्रेंड चला। जिनसे यदि कोई एक सेक्टर कमजोर पड़े तो बाकी दो सेक्टर अर्थव्यवस्था को संभाल लें। लेकिन भारत में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। अब, यदि नौकरी की उपलब्धता से पहले, कौशल विकास का होता है, तो इससे देश में सामाजिक और राजनैतिक समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। क्योंकि कुछ इंसान के पास जॉब है ही नहीं, तो उसका गुस्सा सरकार पर ही निकलेगा।

नौकरी बढ़ाने के लिए सरकार निवेश खासकर विदेशी निवेश पर जोर दे रही है। लेकिन जब तक व्यापार करने की आसानी नहीं होगा, निवेशक लोगों को निवेश का माहौल नहीं मिलेगा, तब तक निवेशक अपना पैसा यहां नहीं लगाएगा, सरकार भले कितना ही उसको लुभा ले। जैसा कि पड़ोसी पाकिस्तान का इस मामले में बुरा हाल है बेहतर एफडीआई न होने की वजह से।

जब तक भूमि व श्रमिक सुधार भारत में नहीं सुधरेंगे, व्यापार में आसानी नहीं आ पायेगी। मोदी सरकार ने भूमि व श्रमिक सुधार लाने की कोशिश की, लेकिन पूरा विपक्ष इसके खिलाफ खड़ा हो गया, इसको गरीब विरोधी बताने लगा। देश को बरगलाने लगा। ये देख के सरकार ने भी कदम पीछे खींच लिए। बस यही समस्या का मूल जड़ है। एक सुधारीकरण नीति का राजनीतिकरण। देश की भोली-भाली जनता को इतना अर्थशास्त्र समझ नहीं आता और इसी बात का फायदा ये राजनेता उठाते हैं।

इस समस्या का एक ही उपाय है, भूमि व श्रमिक सुधार। लेकिन कोई सरकार इतना बड़ा जोखिम लेने की स्थिति में नहीं दिखती। उनको कुर्सी जाने का डर है। लोग इतने समझदार हैं नहीं कि बहकावे में ना आएं। लोगों को अर्थशास्त्र समझना होगा। लेकिन जिस देश में अभी जब लोग दो वक्त की रोटी के लिए तरस रहे हैं, वहां अर्थशास्त्र समझने-समझाने का वक्त और समझ किसके पास है?

और लोग बिना कुछ सोचे समझे सरकारी नौकरी के पीछे भागे जा रहे हैं। उसी के लिए सरकार को दोष दिए जा रहे हैं। जबकि असलियत यह है कि देश में पैदा होने वाली नौकरियों में सरकारी नौकरी का प्रतिशत केवल 1 प्रतिशत है बाकी 99 प्रतिशत प्राइवेट नौकरी हैं और ये 99 प्रतिशत भी कम हैं। बाकी 1 प्रतिशत सरकारी नौकरी का भी कोई भरोसा नहीं। वर्तमान की यह स्थिति बहुत ही गंभीर है।

# दुश्वारियां देखो मैं तुमसे कितना बड़ा हूं

# अवनींद्र मान

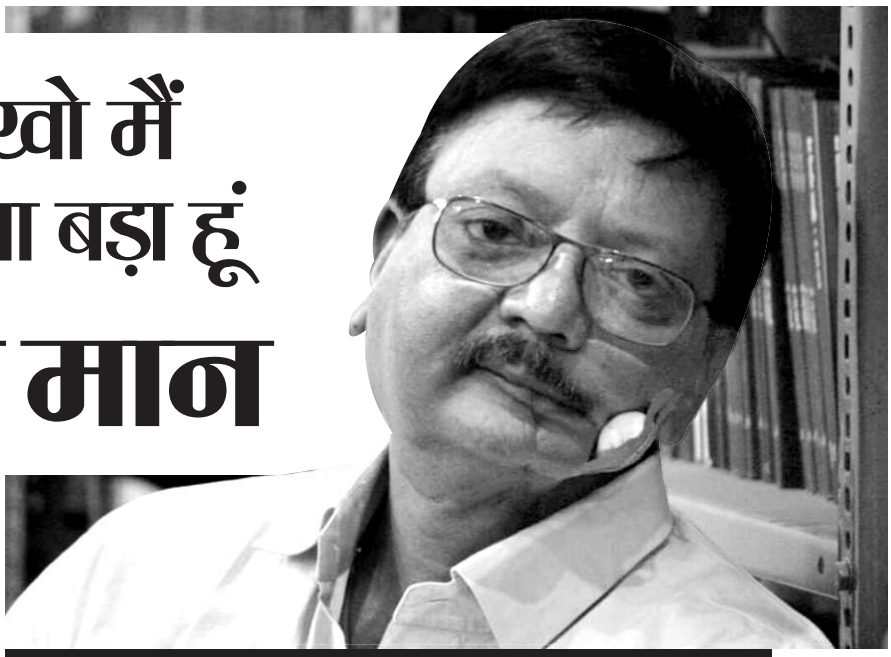

**राजस्थान के जयपुर शहर के रहने वाले अवनींद्र मान की जिंदगी उन लोगों के लिए मिसाल है जो बीमारी की वजह से जिंदगी से हार मानकर बैठ जाते हैं। इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाले अवनींद्र मान कहते हैं कि कैंसर ही तो हुआ है इसके डर से जिंदगी जीना और अपनी जिंदादिली कैसे छोड़ दें, लड़े और इस कैंसर को हराया और अब यह फिर उभरकर आया है तो इसे फिर से हराएंगे हर पल यूं ही मुस्कराएंगे...**

**अवनींद्र मान का शेर है...**

**लड़खड़ा रहा हूं पल-पल, फिर भी खड़ा हूं**
**दुश्वारियां देखो मैं तुमसे कितना बड़ा हूं**

अवनींद्र ने माही संदेश पत्रिका के *प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन* से हुई बातचीत में बताया कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद एनबीसी जयपुर में 10 वर्ष तक नौकरी की जब नौकरी करते हुए लगा कि व्यापार में हाथ आजमाना चाहिए तो अच्छी नौकरी छोड़कर वर्ष 1998 में गारमेंट बिजनेस आरंभ किया जिसमें मन लगाकर काम किया इसके बाद वर्ष 2006 में प्रॉपर्टी, इन्वेंस्टमेंट, कंस्ट्रक्शन का काम आरंभ किया। जिंदगी का सफर आगे बढ़ा तो वर्ष 2012 में मुंह के अंदर छाला हुआ, चिकित्सकीय परामर्श से बायप्सी कराई तो रिपोर्ट में मुंह के कैंसर होने की पुष्टि हुई, इसके बाद शुरु हुआ जिंदगी और बीमारी से मुकाबला 32 थैरेपी हुईं और इस मुकाबले में अवनींद्र की जिंदादिली ने विजय पाई और वर्तमान में जब कैंसर दुबारा हुआ तो अवनींद्र मुस्कराते हुए कहते हैं कि चिंता किस बात की इसे फिर से हराएंगे। वर्ष 2016 में मुंह की प्लास्टिक सर्जरी कराई, इसके बाद हाल ही में वर्ष 2018 में फिर ऑपरेशन किया गया, अब तक अवनींद्र के 7 ऑपरेशन हो चुके हैं, आज भी अवनींद्र नियमित रूप से कीमोथैरेपी ले रहे हैं और जिंदगी और उन लोगों के लिए मिसाल पेश कर रहे हैं जो बीमारी के बाद हार मानकर बैठ जाते हैं...

हाल ही अवनींद्र के पिता जगवीर सिंह का स्वर्गवास हुआ है। परिवार में मां विद्यादेवी, पत्नी अर्चना व बेटा अनंत है जो अवनींद्र का मनोबल हैं। पत्नी अर्चना फैशन डिजाइनर हैं जो अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ-साथ गृहिणी और पत्नी का दायित्व बखूबी निभा रही हैं। साहित्य में रुचि रखने वाले अवनींद्र जिंदगी से जड़ी कविताएं लिखते हैं और विभिन्न काव्य गोष्ठियों व कवि सम्मेलनों में कवि के रूप में शिरकत करते हैं, अवनींद्र बताते हैं कि उन्हें कॉलेज के दिनों से ही कविताओं का

शौक लगा जो आज भी बदस्तूर जारी है, कविताएं लिखने के अलावा अवनींद्र मधुर गीत भी गाते हैं। अवनींद्र का एक और बेहतरीन शेर याद आया...

*पलकों की चौखट पे सम्हल जाते हैं*
*हौसले मेरे, समंदर निगल जाते हैं*

## हेल्थ इंश्योरेंस जरूर करवाएं

अवनींद्र बताते हैं कि आज किसी भी बीमारी में पैसा अहम भूमिका निभाता है, बीमारी से लड़ने के लिए तीन चीजों की सख्त जरूरत होती है पहला है सकारात्मक मनोबल, दूसरा परिवार के सदस्यों का सहयोग व तीसरा है पैसा। पैसा यहां इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसके बिना उपचार करवा पाना असंभव है, मैंने हेल्थ बीमा करवा रखा था तो मुझे आर्थिक रूप से काफी सपोर्ट मिला, आप अपनी मोटर साइकल/ स्कूटी/ कार आदि का इंश्योरेंस तो करवाते ही हैं न क्या आपका शरीर आपकी गाड़ी से महत्वपूर्ण नहीं है, जब हम अपनी गाड़ी का इंश्योरेंस करवा सकते हैं तो अपने स्वास्थ्य का क्यों नहीं... इसलिए अपने अनुभव से यह बात मैं आज कह रहा हूं

कि हेल्थ इंश्योरेंस हमें मोरल सपोर्ट देता है ताकि बीमारी में हम और हमारा परिवार टूटे नहीं।

## नशे से दूर रहें युवा

युवाओं लिए अवनींद्र का कहना है कि युवाओं से देश को और उनके परिवारों को बहुत उम्मीदें होती हैं, आज जब देखता हूं तो दु:ख होता है कि आज का अधिकांश युवा नशे की गिरफ्त में हैं, नशा कैसा भी हो अच्छा नहीं होता, गुटखा खाने की आदत थी तो कैंसर जैसी बीमारी लगी, अपने अनुभव से युवाओं से बस यही कहना है जितना हो सके नशे से दूर रहें और अपनी प्रतिभा को समझें क्योंकि आप स्वयं ही अपनी प्रतिभा को समझकर अपना सुनहरा भविष्य गढ़ सकते हैं...


।। श्री गणेशाय नमः ।। रजि नं. 477/JAIPUR/2008-09

श्री बालाजी विद्यास्थली एवं छात्रावास समिति के द्वारा संचालिक

VINAYAK EDUCATION HUB

( Study Solution Provider)

INSTITUTE FOR ALL COMPETITION EXAM

SSC/BANK/RAILWAY/RSMSSB

( MORNING / EVENING BACTH )

Vinayak Dham Complex, Main Nadi ka Phatak
Benar Road, Murlipura, Jaipur

CONTACT : 9680153115, 9829952528

## न धन, न बल, न जाति

# जीती राजस्थान विश्वविद्यालय की छात्रशक्ति- विनोद जाखड़

जोधूला मेड, विराटनगर में जन्मे विनोद जाखड़ की प्रारंभिक शिक्षा हीरापुरा, जयपुर में हुई। इसके बाद राजस्थान महाविद्यालय से ग्रेजुएशन किया। ग्रेजुएशन के दौरान ही छात्र राजनीति में कदम रखा और राजस्थान विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय राजस्थान महाविद्यालय के अध्यक्ष रूप में चुने गए, इसके बाद फिर बारी थी राजस्थान विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बनने की यहां जाति और पैसे से ऊपर उठकर दलित छात्र के रूप में अध्यक्ष बनकर विनोद जाखड़ ने इतिहास रच दिया।

**राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष विनोद जाखड़ की माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन व संवाददाता विनोद चौधरी से विशेष बातचीत....**

### जब बढ़े कदम...

विनोद जाख़ड़ अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि दलित छात्र से राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष बनने का सफर आसान नहीं था, लेकिन मुश्किलों से कभी हार भी नहीं मानी थी वर्ष 2015 में एनएसयूआई से जुड़े,। राजस्थान कॉलेज नदी रूप में था और राजस्थान विश्वविद्यालय समंदर था, अब बारी थी इस समंदर में अपनी नाव चलाने की, जब राजस्थान विश्वविद्यालय में कदम रखा तो भेदभाव, घृणा, जातिवाद, छुआछूत, का माहौल भी सक्रिय था, एक घटना याद आ रही है कि एक विभाग का कार्यक्रम चल रहा था, फ्रेशर पार्टी थी, क्या पता मनमुटाव या फिर जातिवाद या छुआछूत मैंने एक साथी छात्र की प्लेट से चपाती ले ली, मेरे द्वारा चपाती लेते ही उसने वो प्लेट डस्टबिन में डाल दी, तब थोड़ा बुरा लगा कि क्या आज मानवता से बढ़कर जाति हो गई है। तब मैंने फैसला किया मैं जातिवाद से ऊपर उठकर काम करूंगा, कुछ आंदोलन भी किए इनमें से एक आंदोलन लाइब्रेरी के समय को लेकर था पहले लाइब्रेरी 24 घंटे खुलती थी जिसे बाद में 12 घंटे कर दिया, हमने अनशन करके इस समय को 19 से 20 घंटे करवाया, विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार से छात्राओं हेतु अंदर आने के लिए ई रिक्शे की मांग रखी इस मांग को तत्कालीन विधायक दिया कुमारी ने पूरा किया और हमें दो ई-रिक्शे प्रदान किए।

### धैर्य के साथ मिली सफलता

विभिन्न मांगों को पूरा करने के लिए कई बार अनवरत रूप से संघर्ष किया और पार्टी से जब वर्ष 2016 में टिकट मांगा तो पार्टी ने अभी और मेहनत करो कहकर मना कर दिया, हमने सोचा और मेहनत करनी चाहिए शायद हम में कुछ कमी है फिर 2017 में टिकट के लिए बात की लेकिन फिर बात टाल ही गई, इसके बाद एनयूएसआई का इकाई अध्यक्ष बनाया गया, मैंने कभी भी साथी छात्रों से कम्युनिकेशन गैप नहीं रखा जिसका परिणाम यह रहा कि सभी छोटे और बड़े भाइयो और बहिनों का यथासंभव सहयोग मिला, इसके बाद वर्ष 2018 में टिकट मांगा तो पार्टी ने हवाला दिया कि आर्थिक रूप से आप कमजोर है और जाति के रूप में पिछड़े वर्ग से हैं, तब बहुत दुख हुआ कि क्या एससी के घर में पैदा होना अपराध है, मैंने कहा कि पैसा नहीं लेकिन अगर पार्टी थोड़ी मदद करे तो यकीनन मैं पार्टी को झुकने नहीं दूंगा चुनाव जीतकर

आऊंगा, सामने विधानसभा चुनाव थे, दिल्ली से टिकट फाइनल हुआ, पार्टी की अपनी मजबूरी रही होगी, टिकट नहीं दिया गया, निर्दलीय की स्थिति में चुनाव लड़ने को लेकर सारी टीम हताश थी, पार्टी, पुलिस व प्रशासन सभी हमसे अलग थे, परिवार के लोग बोले बर्बाद हो जाएंगे, करोड़ों का खेल है, मां ने कहा कि बेटा पैसा तुम कमाते हो, तुम्हें पैसा नहीं क माता, तुम मेहनत करो जीत तुम्हारी होगी, मैंने साथी छात्रों को टीम के रूप में जोड़कर कहा कि पार्टी ने हमें मौका नहीं दिया, हमें हमारी काबिलियत को दिखाना है, हमने डोनेशन मांगा, छात्रों ने वोट के साथ पेटीएम किए महारानी, राजस्थान, कॉमर्स, महाराजा, हर जाति ने मेरा साथ दिया। छोटे भाई जैसे रणवीर सिंहानिया को पार्टी ने टिकट दिया, हमारी तो पार्टी से लड़ाई थी, रणवीर आर्थिक रूप से संपन्न था, लेकिन उसे पार्टी ने शहीद कर दिया, उस व्यक्ति में गुण थे अगर उसे उचित समय पर टिकट दिया जाता तो वह जरूर अध्यक्ष बनता, रणवीर कॉलेज पास करके विश्वविद्यालय में आया और इतनी

> राजस्थान के नवलगढ़ विधायक डॉ. राजकुमार शर्मा व उनके छोटे भाई युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष राजपाल शर्मा ने सहयोग किया। हमारी जीत का श्रेय मेरी टीम के साथ साथ मेरी मां को जाता है, मां ने कहा था कि बेटा जो मौका मिला है वो खोना नहीं है, जन्म जीतने के लिए होता है।

जल्दी टिकट ले गया इसका मतलब उसके अंदर काबिलियत थी, उसकी इस काबिलियत को पार्टी को और सींचने की जरूरत थी और सींचते तो वो जरूर वृक्ष बनता, मेरे और रणवीर के अंदर न तो मतभेद है और न ही मनभेद , चुनाव जीतने के बाद हम मिले, चुनाव के दौरान मैंने कोई नकारात्मक प्रचार नहीं किया, हमने हमारे हक के लिए लड़ाई लड़ी और जीते। सरकार बीजेपी की थी तो प्रशासन ने भी प्रताड़ित किया।

## जीतने के बाद किए कई काम

चुनाव जीतने के बाद महिला छात्रावासों में सेनेटरी नैपकिन, मैन गेट पर वेटिंग रूप का निर्माण और गार्डों के लिए टॉयलेट व रहने की जगह बढ़िया करवाई, भगतसिंह पार्क में ओपन जिम का निर्माण करवाया जा रहा है, सभी छात्रावासों में आरओ मशीन, तथा बहुत जल्द दानदाता जयसिंह सेठिया के अब लड़कों के लिए दो ई रिक्श बहुत जल्द संचालित किए जाएंगे, हमारी सरकार से मांग भी है कि पेयजल का स्तर बहुत नीचा चला गया, हमें बीसलपुर की लाइन दी जाए, तथा यहां स्वास्थ्य केंद्र बना हुआ है हम चाहते हैं कि यह 24 घंटे खुले और यहां एक एंबुलेंस मिले, इसके साथ-साथ मोटिवेशनल सेमिनार का आयोजन व प्लेसमेंट सेल का गठन भी हमारी प्राथमिकता में शामिल हैं। भविष्य में जनकल्याण के रूप में देश की राजनीति को और स्वच्छ बनाने की ओर प्रयास करेंगे, हमारा प्रयास यह है कि हम साबित करें कि नेता काम करने वाले भी होते हैं

## बस बढ़ते जाना है...

कांग्रेस नेता मानसिक रूप से आर्थिक रूप से नवलगढ़ विधायक डॉ. राजकुमार शर्मा व उनके छोटे भाई युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष राजपाल शर्मा ने सहयोग किया। हमारी जीत का श्रेय मेरी टीम के साथ साथ मेरी मां को जाता है, मां ने कहा था कि बेटा जो मौका मिला है वो खोना नहीं है, जन्म जीतने के लिए होता है। लोगों के लिए हमारी जीत कल्पना के बाहर थी, हमने इतिहास रचा, हमने साबित किया धन से बाहुबल से भी बड़ा होते हैं, व्यक्तिगत रिश्ते, आपका कौशल और आपकी सोच। मैंने 1854 वोटों से जीत दर्ज की, एनएसयूआई और एबीवीपी के दोनों उम्मीदवारों के वोटों को जोड़कर भी मैंने उनसे 65 वोट ज्यादा हासिल किए। ...**शेष पृष्ठ 15 पर**

# राजस्थान प्रशासनिक सेवा: सामान्य परिचय

अखिल भारतीय स्तर पर जो प्रतिष्ठा भारतीय प्रशासनिक सेवा की है, राजस्थान में युवाओं द्वारा वही गौरव राजस्थान प्रशासनिक सेवा का हिस्सा बनकर महसूस किया जा सकता है। यदि आप उपखंड अधिकारी (एसडीएम), उप पुलिस अधीक्षक डीवाईएसपी और तहसीलदार जैसे पदों पर आसीन होकर समाज सेवा करने और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के इच्छुक हैं तो आपके पास राजस्थान प्रशासनिक सेवा से बेहतर विकल्प नहीं हो सकता।

ओहदे और प्रतिष्ठा के हिसाब से यह राजस्थान की सबसे बड़ी सेवा है। राजस्थान लोकसेवा आयोग इस परीक्षा का आयोजन तीन चरणों में करवाता है। प्रथम चरण में आरएएस प्रारंभिक परीक्षा आयोजित होती है, जिसमें इतिहास, भूगोल, राजव्यवस्था, अर्थशास्त्र, कला एवं संस्कृति, विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी, गणित, रीजनिंग, समसामयिक मामले आदि से संबंधित बहुविकल्पात्मक प्रकार के प्रश्न होते हैं। 200 अंकों की इस परीक्षा में 150 प्रश्न होते हैं, जिसमें 40 से 45 प्रतिशत प्रश्न राजस्थान से संबंधित होते हैं। यहां अभ्यर्थी को केवल अहर्ता और अंक प्राप्त करने होते हैं और यहां उत्तीर्ण व्यक्ति ही मुख्य परीक्षा में पहुंच पाता है।

दूसरे चरण में आयोग आरएएस मुख्य परीक्षा आयोजित करवाता है। प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण और विज्ञप्ति में प्रस्तावित पदों के 15 गुना अभ्यर्थियों को मुख्य परीक्षा में शामिल किया जाता है। इस चरण में प्रारंभिक परीक्षा का संपूर्ण पाठ्यक्रम (गणित और रीजनिंग को छोड़कर) तो शामिल है ही, साथ ही नीतिशास्त्र, लोक प्रशासन,समाजशास्त्र, प्रबंध, व्यावसायिक प्रशासन, विधि, व्यवहार, खेल एवं योगा, सामान्य हिंदी, एवं सामान्य अंग्रेजी को भी सम्मिलित किया जाता है। प्रारंभिक परीक्षा के विपरीत मुख्यपरीक्षा में व्यक्तिनिष्ठ एवं विश्लेषणात्मक शैली के प्रश्न पूछे जाते हैं। यहां कुल 800 अंकों के चार प्रश्न पत्र होते हैं। इनमें अधिक से अधिक अंक प्राप्त करना ही सफलता का आधार होता है।

तीसरे चरण पर आयोजित साक्षात्कार की विज्ञप्ति में प्रस्तावित पदों के लगभग दो गुने अभ्यर्थी ही शामिल किए जाते हैं। साक्षात्कार का उद्देश्य विभिन्न विषयों पर अभ्यर्थी के विचार और उसकी व्यक्गित अभिरुचि को परखना होता है। साक्षात्कार 100 अंकों का होता है और अंतिम चयन मुख्य परीक्षा और एवं साक्षात्कार के अंकों को जोड़कर किया जाता है।

तीन चरणीय इस परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा में केवल अर्हता प्राप्त करनी होती है, अंतिम चयन में इसके

**प्रारंभिक परीक्षा**

| प्रश्न पत्र | कुल अंक |
|---|---|
| सामान्य ज्ञान एवं सामान्य विज्ञान | 200 |

**साक्षात्कार**

100 अंक

**मुख्य परीक्षा**

| प्रश्न पत्र | कुल अंक |
|---|---|
| सामान्य अध्ययन प्रथम | 200 |
| सामान्य अध्ययन द्वितीय | 200 |
| सामान्य अध्ययन तृतीय | 200 |
| सामान्य हिंदी एवं सामान्य अंग्रेजी चतुर्थ | 200 |
| योग | 800 |

**अंतिम चयन** कुल 800 अंकों के आधार पर मुख्य परीक्षा साक्षात्कार

अंक नहीं जुड़ते हैं लेकिन मुख्य परीक्षा में पहुंचने के लिए इसे उत्तीर्ण करना भी आवश्यक होता है। अत: अभ्यर्थी को इस स्तर पर तथ्यों का विस्तृत एवं सारगर्भित अध्ययन करना चाहिए। यद्यपि मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार ही अंतिम चयन का आधार होते हैं। अमूमन होता यह है कि जिसके मुख्य परीक्षा में शानदार अंक आए हैं वहीं आरएएस, आरपीएस या तहसीलदार जैसी प्रतिष्ठित सेवा का हिस्सा बन पाता है। इसलिए अगर आपने आरएएस और आरपीएस जैसी उत्कृष्ट सेवा का हिस्सा बनने का सपना देखा है तो संपूर्ण रणनीति के केन्द्र में मुख्य परीक्षा को ही रखना होगा। इस प्रतिष्ठित सेवा का हिस्सा बनने के लिए मानक पुस्तकों का गहन अध्ययन करना भी आवश्यक होता है।

## अभ्यर्थी निम्न पुस्तकों को अपनी तैयारी का आधार बना सकते हैं

| | |
|---|---|
| **इतिहास** | किरण गाइड, आधुनिक भारत का इतिहास (स्पैक्ट्रम), विश्व इतिहास (अखिल मूर्ति) |
| **भूगोल** | एनसीईआरटी (राजस्थान बोर्ड), महेश कुमार बर्णवाल |
| **अर्थशास्त्र** | रमेश सिंह |
| **राजव्यवस्था** | एम. लक्ष्मीकांत |
| **विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी** | स्पेक्ट्रम, विज्ञान (कक्षा-10 राजस्थान बोर्ड) |
| **नीतिशास्त्र** | जी.सुब्बाराव |
| **लोक प्रशासन** | सुरेन्द्र कटारिया |
| **सामान्य हिंदी** | राघव प्रकाश |
| **सामान्य अंग्रेजी** | बी.के. रस्तोगी |
| **करंट अफेयर्स** | दृष्टि करंट अफेयर्स टुडे, मूमल |

*राजस्थान विशेष*

*राजस्थान लक्ष्य*

*राजस्थान अध्ययन की पुस्तकें, कक्षा 9 से 12*

*राजस्थान कला एवं संस्कृति*

*हिंदी ग्रंथ अकादमी राजस्थान*

**राजेश कुमावत**

9024901200

...क्रमशः पृष्ठ 13 से

विचार एनएसयूआई से मेल खाते थे, राहुल गांधी, अशोक गहलोत, सचिन पायलट आदि से बहुत कुछ सीखने को मिला। चुनाव जीतने के बाद जननायक गहलोत ने कहा कि पार्टी की ओर से कुछ कमी रही होगी उसे हम मिलकर दूर करेंगे , मुख्यमंत्री अशोक

गहलोत के निर्देशानुसार धौलपुर के अंदर आयोजित राहुल गांधी की सभा में मैंने फिर से एनएसयूआई जॉइन की, राहुल गांधी के साथ बस में था और मंच पे था,यह मेरे लिए गौरव की बात थी। मेरे पास बीजेपी की तरफ से कॉल आए कि मैडम को जॉइन करो और इसी बार विधानसभा में चुनाव में सुनहरा मौका देंगे लेकिन विचारधारा कांग्रेस पार्टी की ही मन को भाई, आगे और परिपक्व होंगे विधायक, मंत्री, सांसद बनेंगे...

70 साल के इतिहास में पहली बार दलित अध्यक्ष बना हूं, और मेरा यह प्रण है कि मैं हमेशा जाति से ऊपर उठकर काम किया है और आगे भी करूंगा, मुझे हर वर्ग के छात्रों ने चुना बस अब छात्रों की भलाई के लिए दुगनी ऊर्जा से काम करना है, मेरे प्रेरणास्त्रोत की बात की जाए तो वो हैं अब्दुल कलाम और भीमराव अंबेडकर,स्वामी विवेकानंद, ऐसा नही कि मैं दलित हूं इसलिए भीमराव अंबेडकर को आदर्श बता रहा हूं, अगर हम अंबेडकर को पढ़ेंगे तो जानेंगे कि कैसे जिंदगी में आगे बढ़ा जाता है, आर्थिक और जातिगत रूप से कमजोर होना असफल होना नहीं है, यदि जिंदगी में आगे बढ़ना है तो कोई भी बाधा आपको नहीं रोक सकती। इन तीनों व्यक्तित्व को जो इंसान पढ़ेगा वो आगे बढ़ेगा। वर्तमान राजनीति में प्रेरणास्त्रोत अशोक गहलोत व युवा राजनीति में डॉ राजकुमार शर्मा हैं। प्रकृति ने जो दिया है वह सब पसंद है, हम मानवता को आगे रखकर जीवन में आगे बढ़ें यकीनन सफलता मिलेगी। अभाव में आदमी बहुत कुछ सीखता है, अभाव से लड़कर गुणवान बनता है।

# पापा की खुशबू लौट कर आयी (भाग- 2)

**नवीन जैन (IAS)**
आयुक्त, श्रम एवं
नियोजन विभाग

**( गतांक से आगे... )**

आशा है मेरी इस सीरिज के प्रथम भाग में ''मक्खू'' वाली कहानी से आप लोगों को भी अपने मिडल क्लास होने तथा उससे जुड़े दुनियादारी वाले पहलूओं का भरपूर या हल्का-फुल्का अहसास हुआ होगा। ये अहसास गजब के रिफ्रेशिंग होते हैं भले सफल रहे हों या नहीं ।

## जिंदगी की कहानी

एक मिडल क्लास के आदमी को जब अचानक अपनी नौकरी जाने के डर के बीच अपने स्कूल जाने वाले बच्चों, गृहिणी के रूप में स्थापित अपनी धर्म पत्नी के चेहरे की तरफ देखता है तो एक अज्ञात बिजनेस में जाना उसे तलवार की धार, आग के दरिया के पार जैसे लगते हैं पर न तो कोई स्पेशल इफेक्ट ही उसकी मदद को आता है और न ही किसी ''फेयरी टेल'' वाले ताबीज की उम्मीद रखता है। चिराग घिसने पर आने वाला जिन्न भी मानो हिकारत की निगाह से देखकर उसके अनिश्चित भविष्य के धुएँ में गुम हो जाता है। उस बेचारे इन्सान को तो अपने खुद के समाज, कुनबे, दोस्तों यहाँ तक कि अत्यन्त नजदीकी रिश्तेदारों की आँखें तक ताक रही होती हैं कि देखें- पार लगता है या नहीं। कितने लोग ईमानदारी से उसकी एक सीधी रस्सी पर सधी चाल वाले करतब की सफलता की कामना कर रहे होंगें, यह कहना तो ज्योतिषियों के बस की बात भी अब नहीं है। आज कितने लोग अपने आस-पास के लोगों या

उनके बच्चों के सुखद भविष्य के लिए दिल में दुआ करते हैं। यहाँ मेरा मतलब उनके एग्जाम से पहले वाट्सएप पर बेस्ट ऑफ लक लिखना या उसकी सफलता की खबर मिलने पर कोई कंपनी की फीड गैलरी में से jpg/Gif रूपी भावना प्रकट करना नहीं है बल्कि जहां तक संभव हो शब्दों से, सहारे से तथा कोई भी प्रकार की सहायता से उस व्यक्ति या उसके संघर्षरत बच्चों को संबल प्रदान करने से है। मुझे लगता है कि तकनीक ने औपचारिकताओं का वजन काफी बढ़ा दिया है पर सामाजिक अनौपचारिकताऐं लुप्त प्रायः सी होती जा रही हैं।

## छोटी खुशियों में बड़ी खुशियां तलाश करना...

खैर मैं तो यहाँ अपने मक्खू गाँव से अपने प्रिय पापा का रिश्ता, पंजाब में बढ़ते आंतकवाद के साये में उनका मक्खू छोड़कर परिवार के बीच आकर अपना खुद का बिजनेस शुरू करने से आपको वापस जोड़ रहा था। अब हम बात करते हैं उस दूसरी छोटी सी घटना की जो मेरे लिए फिर से बहुत सी चीजों- जैसे कि मिडल क्लास में पैदा होना, छोटी छोटी खुशियों में बड़ी यादें समेटना, लेखन से संबंध नहीं के बराबर होने पे भी कोशिश तो करना को साथ लेकर आई। हुआ ये कि इस बार पापा की छमाही के मौके पर अपने कस्बे नरवाना जाने पर घर से वापस आते समय मेरी मम्मी ने मुझे पूछा-पापा के रूमाल तुम्हें दे दूँ क्या ? मैं एक बार तो सकपकाया - किसी का रूमाल कोई और भी यूज करता है क्या ? फिर दिमाग में आया अच्छे से धोने के बाद दिक्कत क्या है। हो सकता है कि कई लोग इस वाक्य को पढ़ते ही हैल्थ/ हाइजिन की बातें करने लगें पर यहाँ मैं इमोशनल लेवल की स्थिति बना रहा हूँ ना कि रूमाल से जुडी स्वच्छता की बातों पर। बात तो यह है कितने भारतीय आदमी घर से ऑफिस/ दुकान/ फैक्ट्री जाते समय पर्स, घड़ी, रूमाल, मोबाइल को लेते समय- ये रूमाल कब खरीदा, कितना यूज किया हुआ है, सोचे बिना आगे बढ़ जाते हैं। सीधा जेब में समा जाता है- बहुत गर्मी होने या सर्दी लगने पर दिन में भी बाहर आता है नही तो शाम को यूँ का यूँ ही फोल्डेड बाहर आता है या जब पैंट/जींस/पाजामा धोने में जाता है तो घर की औरतें उसे बाहर निकाल कर धोने के कपडों में शामिल कर लेती हैं। आप में से कई पढ़ने वालों के अनुभव कुछ जुदा हों तो अलग बात है। आपने कभी नोट किया होगा कि हम बस में बिना पानी बैठ गये तो सफर के दौरान जरूर प्यास लगती है और पूरी भरी बोतल बगल में रखकर सफर करिये, पूरी भरी बोतल साथ उतरती है। खैर हम यहाँ रूमाल के बारे में कम और पापा के रूमाल के बारे में ज्यादा बात करेंगे। रूमाल से जुडी घटनाओं को अब मैं इमेजिन करने की कोशिश करूंगा -या यूँ कहूँ कि इमेजिन भी यहाँ सही शब्द नहीं है तो साधारण शब्दों में जो पापा ने पल जिये होंगे, उनको पापा के वास्तविक जीवन के आधार पर, वापस फिर से reconstruct करते हैं।

## रूमाल की कहानी

चलिये थोड़ी लाइफ की फिलॉस्फी से शुरू करते हैं। अब कुछ लोग सोचेंगे- किसी इंसान के अपने जीवन में रूमाल जिसे हम hanky/handkerchief से भी जानते हैं, के इस्तेमाल करने पर भी क्या कोई पोस्ट लिख सकते हैं और क्यूँ लोग इसमें इन्ट्रेस्टेड होंगे? क्या रूमाल किसी इंसान के जीवन की विविधताओं का कैनवास हो सकता है? जेब से चुपचाप आपके चाहे अनुसार निकल कर आपके ही हाथों के सहारे से आपकी भावना के अनुरूप बहरूपिया बनकर अपने उस लम्हे की भूमिका निभा कर फिर पर्दे के पीछे चले जाने वाला महान किरदार है तो वो रूमाल ही तो है। अब शायद कुछ लोग मेरे साथ आ चुके हैं। रूमाल को एक निर्जीव वस्तु मानें तो मानें पर उस से जुड़े पल कहानियों को जन्म दे सकते हैं।

आईये पहले एक कमर्शियल सिनेमा टाईप बात करते हैं। प्रेमिकाओं को रूमाल उपहार में देना या उनकी बेरूखी से या लुभाने के इरादे से फेंके गए रूमाल पर ही जान की बाजी लगा देने वाले कितने ही मोहब्बत के पुजारी हमारी कितनी ही प्रसिद्ध या छुपी हुई प्रेम कथाओं के रोमांटिक हीरो हैं। चलिए अब आपको एक आर्ट फिल्म या ऑफबीट फिल्म के चश्मे से दिखाता हूँ। एक गरीब माँ का बच्चा बाप से अप्रूवल मिलने के बाद जब किसी सस्ते ही सही पर प्राइवेट स्कूल में जाने लायक हो जाता है तो उसकी किसी वीकली बाजार से लाई गई वर्दी पर सेफ्टी पिन से एक छोटा रूमाल लगाते हुए माँ को ऐसा लगता है मानो देश के राष्ट्रपति किसी बड़े आदमी को पदम सम्मान दे रहे हों। उस रूमाल टांकने की प्रक्रिया में लगने वाले कुछ सेकण्ड उसकी आज तक की बेरंग और बेमतलब सी लगने वाली जिंदगी में सबसे बेहतरीन युगों जैसी कीमत रखते हैं।

वैसे मैंने सोचा था कि मैं अपने पापा से जुड़ी दोनों घटनाओं - मक्खू और उनके रूमाल - दो भागों में पूरी कर लूँगा पर यह अभी हो नहीं पाया। वैसे आजकल ट्रिलोजी यानि एक पूरी कहानी तीन भागों में कहने का रिवाज भी है तो मैं भी थोड़ी लिबर्टी ले लेता हूँ। पापा के रूमालों में गुंथे कुछ पल फिर से याद करने का इससे अच्छा बहाना भी नहीं मिलेगा। तब तक इस मैसेज के साथ फिर मिलते हैं कि जिन्दगी में आनन्द बहुत बड़ी चीजों से मिले, यह जरूरी नहीं है क्योंकि कपड़े का छोटा सा चौकोर टुकड़ा भी बहुत सी खुशनुमा यादों का पिटारा बन सकता है। आप भी सोचिये कि आपके रूमाल ने क्या-क्या गुल खिलाये हैं? सही टाईम पे पूछेंगे तो ये तय है कि जितनी ईमानदारी से आप सवाल करेंगे उतना बेबाकी से ये जवाब देगा। **(क्रमशः)**

## सुनो सरकार

# जनता की परेशानी



सेवा में,
श्रीमान अभियंता बिजली विभाग,
भांकरोटा जयपुर,
राजस्थान।

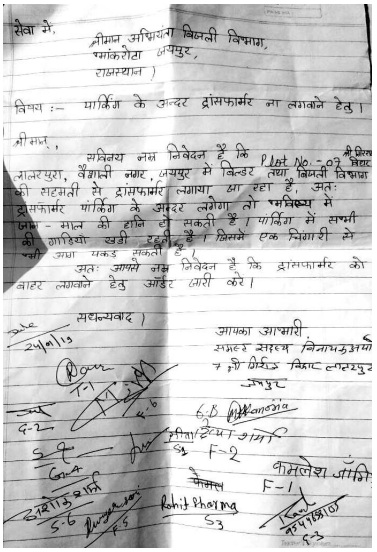

विषय :- पार्किंग के अन्दर ट्रांसफार्मर ना लगवाने हेतु।

श्रीमान,
सविनय नम्र निवेदन है कि Plot No.-07 श्री गिरराज विहार लालरपुरा, वैशाली नगर, जयपुर में बिल्डर तथा बिजली विभाग की सहमती से ट्रांसफार्मर लगाया जा रहा है, अतः ट्रांसफार्मर पार्किंग के अन्दर लगेगा तो भविष्य में जान-माल की हानि हो सकती है। पार्किंग में सभी की गाडियां खडी रहती है। जिसमें एक चिंगारी से भी आग पकड़ सकती है।
अतः आपसे नम्र निवेदन है कि ट्रांसफार्मर को बाहर लगवाने हेतु ऑर्डर जारी करे।

सधन्यवाद।

24/01/19

आपका आभारी,
समस्त सदस्य विनायक अपा.
7 श्री गिरिराज विहार लालरपुरा
जयपुर

Rohit Sharma

जयपुर शहर के गिर्राज विहार के विनायक अपार्टमेंट में इन दिनों जनता को बिल्डर और बिजली विभाग की मनमानी झेलनी पड़ रही है, विनायक अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों का कहना है कि बिल्डर और बिजली विभाग की सहमति से ट्रांसफर अपार्टमेंट की पार्किंग के अंदर लगवाया जा रहा है, अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों का मानना है कि पार्किंग के अंदर ट्रांसफॉर्मर लगेगा तो जान-माल की हानि हो सकती है, पार्किंग में सभी की गाड़ियां खड़ी रहती हैं, जिसमें एक चिंगारी भी बड़ी आग पकड़ सकती है। इस संबंध में अपार्टमेंट निवासियों ने अपने हस्ताक्षर करके एक प्रार्थना पत्र अभियंता बिजली विभाग, भांकरोटा को सौंपा है लेकिन अभियंता ने प्रार्थना पत्र लेने से मना कर दिया और कहा कि आप बिल्डर से ही बात करें। जनता की सरकार को जनता की आवाज आखिर कब सुनाई देगी, जनता इंतजार में है....

**अगर आप भी किसी परेशानी से गुजर रहे हैं और अपनी बात प्रशासन व सरकार तक पहुंचाना चाहते हैं तो माही संदेश राष्ट्रीय पत्रिका के संवाददाता से बात करें या कार्यालय फोन करें**

**9887409303**

# शहीद लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त मार्ग का उद्घाटन

**28 जनवरी** को निवारू मिलिट्री स्टेशन, जयपुर में आयोजित समारोह के दौरान निवारू मिलिट्री स्टेशन की मुख्य सड़क का नामकरण लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त मार्ग किया गया। इस मुख्य सड़क का उद्घाटन शहीद लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त (अशोक चक्र) की मां श्रीमती अनिता नाथ ने किया, इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल चेरिस मैथसन, (दक्षिणी-पश्चिमी कमान) व शहीद पुनीत नाथ की बहिन दिव्या दत्त भी उपस्थित थीं। गौरतलब है कि शहीद पुनीत नाथ दत्त कश्मीर के नौशेरा क्षेत्र में 20 जुलाई, 1997 को आतंकवादी मुठभेड़ में शहीद हो गए थे।

*माही संदेश राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के आगामी मार्च 2019 अंक में पढ़िए शहीद पुनीत नाथ दत्त के सैन्य जीवन से जुड़ी बातें...*

# माही संदेश सामाजिक सरोकार

**समाज** के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं
**समाज** सेवा के लिए समर्थ लोग आगे आएं
**एक** कदम बढ़ेगा तो बढ़ेगा हिंदुस्तान
**इन** सर्दियों में गर्म कपड़े दान करें नए नहीं तो अपने पुराने सही, किसी के लिए वही नए से कम नहीं
**शहीद** परिवार को आर्थिक सहयोग करें
**किसी** गरीब बच्चे की पढ़ाई के लिए सहयोग करें
**व्यस्त** समय में से कुछ समय निकालकर गरीब बच्चों को पढ़ाकर आएं

**सम्पर्क :**
**संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303**
**email-**
**mahisandesheditor@yahoo.com**

## माही संदेश प्रतिनिधि

जोधपुर प्रतिनिधि
**शुभम पांडे***

बीकानेर प्रतिनिधि
**दीप्ति पाठक ***

उदयपुर प्रतिनिधि
**रुचि शर्मा***

असम प्रतिनिधि
**रेखा मोरदानी***

गुजरात प्रतिनिधि
**चिराग कुमार ***

# अनाम रिश्ते

भावनाओं में बुना
एक दर्द
जो सालता है
धीरे-धीरे मुझे
वक्त, उम्र और संवेदनाओं
के द्वार पर
दूरियों को पार कर यह मन
तुम तक पहुंच ही जाता था
बार-बार
खुशी मिलने, सपने बुनने
आत्मीय अहसासों के
बनते बादलों
और सम्बल बनने के वादों को
फलते-फूलते देखने के भरम में
सच समझ
कुलाचें भरता रहा मन
मृग- मरीचिका-सा
खुशियों का ताना-बाना बुनते
यौवन के कंधे चढ़ आया
मन के किसी कौने में छिपा प्यार
मुझे शापित कर गया
खुशियों को ढहा दिया
रेत महल की तरह
सच ही तो कहा था
उस महापुरुष ने-
जीवन के रेगिस्तान में
भटकते-भटकते मिट जाओगे
कस्तूरी पाने के भरम में
यह जीवन
ये अनाम रिश्ते भी तो
नदी के दो किनारे हैं
जो साथ- साथ चलते हैं
बंधे हुए हैं
अपने -अपने गुरुत्वाकर्षण से
फिर भी दोनों के बीच खालीपन है
धरती और आकाश के मिलन की तरह
जो दिखते तो हैं, पर
कभी मिलते नहीं!

**राजकुमार जैन 'राजन'**
(चित्तौड़गढ़), राजस्थान

# गीत इतने रात-दिन मैंने कहे हैं...

**(1)**

खुश रहो, तुम प्रात की पहली किरण हो
भूल जाओ यह कि दुख मैंने सहे हैं
रवि-किरण-दल अब तुम्हारा साथ देंगे
साथ मेरे, तम घनेरे ही रहे हैं

अश्रु-पूरित हैं, तुम्हारे मधु-नयन प्रिय
हो न चिन्तित तुम, बताओ बात क्या है
मैं सदा वंचित रहा हूं, जब सुखों से
यह विरह का, क्षुद्र-सा आघात क्या है
दुख न अब किंचित मुझे दुख दे सकेंगे
मानकर वरदान ये मैंने गहे हैं

खुश रहो तुम प्रात की पहली किरण हो
भूल जाओ यह कि दुख मैंने सहे हैं

तुम सुमन चुन लो स्वयं के हेतु मनहर
पांव मेरे शूल चूमें, चूमने दो
तुम सुगंधित बास के आवास ले लो
और मरघट में मुझे अब झूमने दो
स्वप्न मेरी रिक्त पलकों में पलेंगे
आज तक तो सिर्फ आंसू ही बहे हैं

खुश रहो तुम प्रात की पहली किरण हो
भूल जाओ यह कि दुख मैंने सहे हैं

राह से मेरी, कदम अब मोड़ भी दो
मोह का बंधन बचा है, तोड़ भी दो
तुम अमरता हेतु अमृत-पान कर लो
प्रश्न मेरी मर्त्यता का छोड़ भी दो
लोग मुझको याद सदियों तक रखेंगे
गीत इतने रात दिन मैंने कहे हैं

खुश रहो तुम प्रात की पहली किरण हो
भूल जाओ यह कि दुख मैंने सहे हैं

रूप बंधों के नए संसार में तुम
जो मिला कर्तव्य, अब उसको निभाना
भाग्य में जब है यही, क्या कर सकोगी
हो सके तो प्यार मेरा भूल जाना
अब विदा प्रिय, यह न सोचो फिर मिलेंगे
प्रीति के प्रासाद पल भर में ढहे हैं

खुश रहो तुम प्रात की पहली किरण हो
भूल जाओ यह कि दुख मैंने सहे हैं।

**(2)**

मित्र यह अवदान लेकर क्या करूंगा
व्यर्थ का सम्मान लेकर क्या करूंगा

गीत जो लिखे निरंतर, अश्रुओं से
हर नगर, हर गांव में, गाता रहा मैं
कौन समझा दर्द की भाषा, बताओ
यद्यपि हर ठौर समझाता रहा, मैं
बुद्धि का, क्या है हृदय से मेल, मित्रों
और ज्यादा ज्ञान लेकर क्या करूंगा

हूं द्रवित यह जानकर, सब चाहते हैं
सूर्य-सा ज्योतित सदा हो, नाम मेरा
आपका आदेश है, सर-माथ मेरे
किंतु मानवता बचाना काम मेरा
अवनमन से उन्नयन तक मार्ग कर दूं
मैं पतित उत्थान लेकर क्या करूंगा

ताम्र-पत्रों से सुसज्जित, पट्टिका पर
यह यशो-गाथा, प्रशंसा में लिखी है
किंतु आकर्षित मुझे करती, वही धज
जो करोड़ों पाठकों के हिय बसी है
गा रहे हैं जब, यहां सब गीत मेरे
यह नवल यश-गान लेकर क्या करूंगा

व्यक्ति को अमरत्व कब मिला है
हां, अनश्वर कर्मकृतियां ही बनातीं
व्याप्त होता सर्व, यश उसका जगत में
सब दिशाएं, नित्य उसके गीत गातीं
मैं नहीं गुंजित रहेंगे गीत मेरे
ये विरुद, स्तुतिगान लेकर क्या करूंगा

मीत ने दी, भाव को मेरे, सघनता
गीत को मेरे, सरलता प्रीत ने दी
कौन परिचित था अकिंचन से जगत में
मर्त्य मैं, मुझको अमरता गीत ने दी
याद मुझको लोग सदियों तक रखेंगे
अब अमर वरदान लेकर क्या करूंगा।

**रौशन मनीष**
ग्वालियर, मध्यप्रदेश

# गिरगिटों की बस्ती

कहानी : शिशिर कृष्ण शर्मा

**'मूर्ख हो तुम... एक्टिंग भी कोई सीखने की चीज है? ...अगर वो महाशय इतने ही लायक थे तो खुद क्यों नहीं बन गए स्टार? ...एक्टिंग की दुकान नहीं चली तो लूटपाट का धंधा शुरू कर दिया?' - इन अल्फाज को जुबां पर ही रोक लेने की कोशिश में तनुज को खुद से बेतरह जूझना पड़ा...वो आमिर के दु:खों में और इजाफा नहीं करना चाहता था।**

**उसकी आंखों में समंदर था...**

रात गहराने लगी थी...स्याह चादर पर टंके कांसे के कटोरे की चमक बुझी हुई सी थी...चादर को चूमते दड़बों के पहाड़ों में झिलमिलाती रोशनियों के सितारे कहीं ज्यादा चमकदार थे...सितारे उसकी आंखों के समंदर में झिलमिला रहे थे...रात पूरे चांद की थी...!

वो घंटा भर पहले ही तनुज को मिला था। ...रिसेप्शन पर रखे सोफे के एक कोने में दुबका हुआ, सिमटा हुआ सा।...तनुज ने उसपर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, देता भी क्यों?...ग्रीक देवताओं के से तीखे नैन-नक्श और गठीले, तराशे हुए बदन के इन लम्बे, छरहरे खूबसूरत नौजवानों की भीड़ तो यहां हर रोज फिल्मी ऑफिसों के दरवाजों पर, रिसेप्शन पर नजर आती है...आंखों में तमाम सपने और मन में सिर्फ एक सुनहरी मौके की हसरत लिए...सो यही ऑफिस कौन सा अलग था!

'सर वो मीटिंग में हैं...प्लीज आप दस मिनट वेट करेंगे?' - रिसेप्शनिस्ट ने इण्टरकॉम का रिसीवर नीचे रखते हुए कहा। उसकी बनावटी मुस्कान पर थकावट हावी थी। ऑफिस का समय खत्म हो चुका था।

'शुक्रिया'!

तनुज जाकर इत्मिनान से सोफे पर पसर गया। फिल्मी लोगों के 'मीटिंग में हूं' और 'सिर्फ दस मिनट' के जुमलों की असलियत से वो अच्छी तरह वाकिफ था। डरे हुए लोग... असुरक्षित... हर लम्हा हलक में अटके हुए कलेजे को काबू में रखने की जद्दोजहद में जुटे हुए। समय बिताना था, सो उसने जेब से मोबाईल निकाला और मैसेज बॉक्स को टटोलने लगा।

'सर आप एक्टर हैं?'

तनुज की तंद्रा टूटी। ये प्रश्न उस नौजवान ने किया था।

'कैसे'?...तनुज ने प्रतिप्रश्न किया। सीधा-सपाट उत्तर देना उसके अहं को मंजूर नहीं था।

'दरअसल आप बहुत देखे हुए से लग रहे हैं...इसीलिए पूछा था'।

किसी अनजान व्यक्ति से संवाद शुरू करने का ये सबसे आसान और बेहतरीन बहाना है कि 'आपको कहीं देखा है'...और इस झूठ को आप चुनौती भी नहीं दे सकते, तनुज के मन में ये शाश्वत सत्य कौंधा।

'देखा होगा। ...कभी-कभार शौकिया एक्टिंग कर लेता हूं।'... 'शौकिया' शब्द का इस्तेमाल तनुज को गर्व का एहसास दिलाता था। सिर्फ 'एक्टर' शब्द में उसे बेचारगी नजर आती थी।

'आप भी यहां शर्लीन से मिलने आए हैं?'

'शर्लीन...?' - तनुज को अनजान सा बन जाना बेहतर लगा...

'कास्टिंग डायरेक्टर'...!

'नहीं-नहीं, किसी और काम से आया हूं' - तनुज उसकी पूछताछ से खीझने लगा था।

'मैं दो घंटे से बैठा हूं सर। रिसेप्शनिस्ट ने बोला था शर्लीन बाहर आएगी तो मिल लेना। अभी तक तो आयी नहीं। और अब तो रिसेप्शनिस्ट भी चली गयी।'

'ये सब ये मुझे क्यों बता रहा है? क्या मुझे नहीं पता यहां का रवैया?' - सपाट चेहरा लिए तनुज उसकी ओर मुड़ा। वो चाहता था कि नौजवान खुद ही उसकी खीझ और नाखुशी को महसूस कर ले। लेकिन वो तो अपनी ही रौ में था।

'शर्लीन आज फिर से मुझे टाल देगी। हर बार यही होता है।'

उसके चेहरे पर बेचारगी, आंखों में उदासी और आवाज़ में टूटन थी। तनुज ने अपने भीतर कुछ पिघलता सा महसूस किया।

'हाय तनुज, हाऊ यू?' - ये शर्लीन थी।

'एम गुड।'...तनुज ने मुस्कुराने की कोशिश की।

शर्लीन को देखते ही नौजवान उछलकर उसके सामने जा खड़ा हुआ।

'तुम...क्या नाम बोला था?'

'आमिर।'

'या या आमिर...देखो अभी तक तुम्हारे लिए कोई कैरेक्टर नहीं आया...अगले हफ्ते ट्राय करो न!'

नौजवान सर झुकाकर फर्श को ताकने लगा।

'हां तनुज बोलो...मुझसे काम है?'

'नहीं, एक दोस्त से मिलना है।' - तनुज ने अन्दर की तरफ़ इशारा किया। उसे गुस्सा तो बहुत आया, 'बदतमीज़ छोकरी! अपने बाप से भी उसका नाम लेके बात करती है क्या? ऐ जैक्सन...या ऐ जयकिशन, जो भी नाम होगा बाप का?'...फिर सोचा किस किस को सुधारें, यहां का तो पूरा ढर्रा ही बिगड़ा हुआ है।

'ओके...बाय...टू मच वक।' -

शर्लीन ने दरवाज़ा खोला और ऑफ़िस के भीतर अंतर्ध्यान हो गयी।

'देखा सर? अगले हफ़्ते फिर से यही होगा।' उस नौजवान की कातर दृष्टि तनुज के मन को भेदती चली गयी।

'तुम्हारा नाम आमिर है?'

'जी सर।'

नहीं...वो आमिर नहीं था...वो कार्तिक था...उसके चेहरे पर कार्तिक का चेहरा उग आया था...तनुज जड़वत उसे ताक रहा था...हां, वो कार्तिक ही था! ...तनुज की खीझ कार्तिक के प्रति तरस और ज़िम्मेदारी के मिलेजुले एहसास में तब्दील हो चुकी थी।

'चलता हूं सर !' - आमिर ने रूंधे स्वर में कहा।

'रूको!'- तनुज उठा खड़ा हुआ। उसके मन में आमिर के बारे में जानने और उसे सहारा देने की इच्छा बलवती हो उठी थी।...वो भी आमिर के साथ-साथ बाहर निकल आया।

शाम गुजर चुकी थी...दिसंबर का महीना था... मौसम में गुलाबी ठंडक थी... लिंक रोड नियोन की रोशनियों से सराबोर था। हर तरफ अट्टालिकाएं - सितारों की मानिन्द झिलमिलाते हुए बेशुमार दड़बों को खुद में समेटे...सड़क पर दौड़ती देसी-विदेशी गाड़ियां... दमकते हुए शोरूम्स...चमकते हुए साईनबोर्ड...हर तरफ चकाचौंध... आसमान में उगा पूनम का चांद उस चकाचौंध के सामने अपनी चमक खो बैठा था।

...बदनसीब है ये शहर! ...कुदरत के इन खूबसूरत नजारों का लुत्फ उठाना इसके नसीब में ही नहीं !...उन दोनों ने सड़क पार की और जाकर इनफ़िनिटी मॉल के बाहर सीढ़ियों पर बैठ गए।

'मुम्बई के ही रहने वाले हो?' तनुज ने पूछा।

'कोलकाता का हूं सर।'

'तुम्हारी हिन्दी बहुत साफ़ है?'

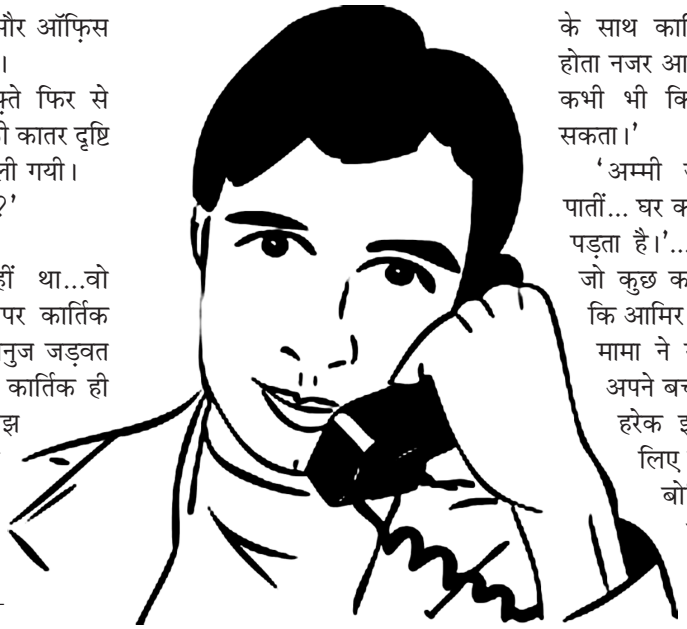

'मेरी स्कूलिंग नासिक में हुई है सर।'

'यहां कहां रहते हो?'

'अंधेरी ईस्ट...पम्प हाऊस'।

'अकेले'?

'नहीं, अम्मी हैं साथ में।'

'और पापा?'

वो खामोश हो गया। कुछ लम्हा तनुज को ताकते रहने के बाद उसने सर झुका लिया।

'क्या हुआ?'

'पापा नहीं हैं सर।'

'ओह!...सॉरी!'...तनुज की आंखों के आगे कार्तिक का चेहरा कौंध गया...अपने भीतर के आवेग को उसने बामुश्किल जज किया।

'अम्मी बीमार रहती हैं सर...आठ ऑपरेशन हो चुके हैं उनके...।'

तनुज को समझ ही नहीं आया कि उसमें इस लड़के ने ऐसा क्या देखा जो उसके सामने अपना दिल खोलकर रख दिया? 'कहीं ऐसा तो नहीं कि इमोशनली ब्लैकमेल करके मुझसे कुछ...?'

'नहीं! बिल्कुल नहीं!'...तनुज ने उस ओछे विचार को दिमाग से झटक दिया... उसे बार-बार आमिर के चेहरे के साथ कार्तिक का चेहरा गड्ड-मड्ड होता नजर आ रहा था... 'नहीं, कार्तिक कभी भी किसी को धोखा नहीं दे सकता।'

'अम्मी ज्यादा काम नहीं कर पातीं... घर का काम भी मुझे ही देखना पड़ता है।'.....और इसके आगे उसने जो कुछ कहा उसका निचोड़ ये था कि आमिर और उसकी मां को उसके मामा ने सहारा दिया, आमिर को अपने बच्चे की तरह पाला, उसकी हरेक इच्छा पूरी की, पढ़ने के लिए उसे नासिक के एक नामी बोर्डिंग स्कूल में भेजा, स्कूल के नाटकों से मिली तारीफों ने उसमें आसमान छूने की चाह जगाई और वो मुम्बई चला आया। मामा ने उसे मुम्बई के एक नामी एक्टिंग स्कूल में एडमिशन दिला दिया।

'उन लोगों ने कहा था कि कोर्स पूरा होने के बाद प्रोड्यूसर-डायरेक्टर खुद ही आकर हमें कास्ट कर लेंगे।...लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।'

फीस कितनी दी? - तनुज ने पूछा।

'एक लाख बीस हज़ार।'...आमिर ने सर झुका लिया।

'लुटेरे!'...तनुज का मन हिकारत से भर उठा...'ये चकाचौंध... ये चमक दमक... मकड़जाल है ये... झूठ-फरेब की बुनियाद पर खड़ी हुई नकली दुनिया, जहां हर कदम पर घात लगाए कफनखसोट खड़े हैं।'

'मूर्ख हो तुम... एक्टिंग भी कोई सीखने की चीज है? ...अगर वो महाशय इतने ही लायक थे तो खुद क्यों नहीं बन गए स्टार? ...एक्टिंग की दुकान नहीं चली तो लूटपाट का धंधा शुरू कर दिया?' - इन अल्फाज को जुबां पर ही रोक लेने की कोशिश में तनुज को खुद से बेतरह जूझना पड़ा...वो आमिर के दु:खों में और इजाफा नहीं करना चाहता था।

'मेरे ये कपड़े देख रहे हैं न सर? बाहर पहनने लायक बस यही एक जोड़ी है मेरे पास...ये जींस और ये टीशर्ट... अब घर जाके मैं टीशर्ट धोऊंगा... रोजाना ही निकलना पड़ता है मुझे कि कहीं तो कुछ मिले, लेकिन...!' ...अपने भीतर के ज्वार को रोक पाने की उसकी कोशिश बेमानी साबित हुई।

'तीन महीने से रूम का भाड़ा भी नहीं दिया है सर।'

'मामा कहां हैं तुम्हारे?'

'कोलकाता में...पहले वो हर महीने ख़र्चा भेजते थे...लेकिन पिछले चार-पांच महीनों से...' - आमिर ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी... उसके और तनुज के बीच कुछ क्षणों के लिए मौन पसर गया... तनुज एकटक उसे देखता रहा, आमिर नजरें चुराता रहा।

'उनका अपना भी परिवार है, जिम्मेदारियां हैं ...कब तक करते रहेंगे वो हमारे लिए?' - आमिर ने सफ़ाई पेश की।...तनुज उसके जज़्बात को बखूबी महसूस कर रहा था...उसके भीतर एक टीस सी उठी और आमिर कार्तिक में तब्दील हो गया !

आमिर कम से कम इतना तो जानता था कि उसे करना क्या है? कार्तिक को तो यही पता नहीं था कि वो क्या करना और क्या बनना चाहता था? अंधेरे में भटक रहा था वो... बदहवास... बौखलाया... बौराया सा... हर तरफ हाथ-पांव पटकता हुआ कि कहीं तो कोई सिरा मिले। ये वो दौर था जिससे युवावस्था की दहलीज पर खड़े हरेक किशोर को गुजरना पड़ता है...वो दौर जब हरेक निगाह सवाल करती नजर आती है कि भविष्य की क्या योजना है? तनुज कार्तिक की छटपटाहट का मूकदर्शक था, मूक इसलिए क्योंकि वो उस तकलीफदेह इतिहास को दोहराने के हक में कतई नहीं था कि बेटे की जिंदगी का फैसला बाप करे, बाप कहे कि साईंस पढ़ो और बाप हुक्म दे कि तुम्हें डॉक्टर या इंजिनियर या फौजी अफसर बनना है क्योंकि फलांफलां के बच्चे डॉक्टर या इंजिनियर या फौजी अफसर बन चुके हैं, कुल मिलाकर मध्यमवर्गीय सरकारी कॉलोनियों की विशुद्ध चूहा दौड़ वाली सोच जिसमें अपना कुछ नहीं, सब देखा-देखी, सब ओढ़ा-ओढ़ी...और इसीलिए तनुज कार्तिक से सिर्फ एक बात कहता आया था, 'तुम जो चाहते हो करो, बस मैं तुम्हें कोई गलत काम नहीं करने दूंगा... अगर जूते सिलने में सुख मिलता हो तो बेझिझक सिलो लेकिन फिर बाटा बन के दिखाओ, मैं तुम्हारा साथ दूंगा।' ...और फिर एक रोज थके-हारे कार्तिक ने कहा था, पापा मैं भी इसी फील्ड में आ जाऊं?'

'जहाज का पंछी!' ...कार्तिक जानता था कि अंततः यही होगा। ...इम्तेहान के दिनों तक में रात-रात भर जागकर टी.वी. पर अंग्रेजी फिल्में देखना, नेट से फिल्में डाऊनलोड करना, उनकी डीवीडी बनाकर रखना... तनुज ने गुस्से में कई बार कहा भी, 'अगर यही करना है तो कल के बजाय आज, इसी वक्त पढ़ाई छोड़ के मैदान में कूद पड़ो ...वरना बंद करो ये सब और पढ़ाई पर ध्यान दो!'...और हर बार बेपरवाह सा जवाब मिलता, 'अरे यार पापा, आप भी न! ...अगर कहीं कुछ नहीं हुआ तो ये फील्ड तो खुली हुई है न, कूद पड़ेंगे!...ये कोई सरकारी नौकरी तो है नहीं कि ग्रेजुएशन की डिग्री और इक्कीस से तीस की उम्र होनी चाहिए ?'

'यार?...कलयुगी औलाद!...बाप को यार कहता है?... मजाक उड़ाता है बाप का?... बेशर्म!'...खून का घूंट पीकर रह जाता था तनुज। ...हर बार सोचता था, 'कर जो तुझे करना है, अब कभी तेरे मामले में मुंह नहीं खोलूंगा।'...लेकिन आंखों देखी मक्खी निगली भी तो नहीं जाती, कमबख्त मुंह था कि हर बार खुल ही जाता था।

'इस फील्ड में तो छत्तीस तरह के काम हैं ...कौन सा काम करना है?' - तनुज ने पूछा, हालांकि जवाब वो पहले से जानता था।

'डायरेक्शन।'

'टी.वी. से शुरू करो।'...तनुज ने कहा।

'ठीक है।'

तनुज ने सईद को फोन किया, 'एक चेला भेज दूं?'

'फैसला कर लिया साहबजादे ने सर?' - सईद ने हंसते हुए पूछा...वो पहले से ही हालात से वाकिफ था।

'इसके अलावा और करेगा भी क्या?' - तनुज ने जवाब दिया।

'अभी भेज दीजिए सर... फिल्मसिटी में शूट कर रहा हूं...हैलीपैड पर... आज से ही काम शुरू करवा देते हैं।' - सईद टी.वी. का एक जानामाना नाम था जो कई बड़े धारावाहिक निर्देशित कर चुका था।

राह मिली तो शख्सियत में ठहराव पैदा हुआ... कमाई शुरू हुई तो चालढाल बदल गयी... काम का अनुभव हुआ तो तौर-तरीकों में आत्मविश्वास झलकने लगा... बच्चे को भंवर से निकालकर सही राह पर ला खड़ा करने की इस सफल कोशिश ने तनुज के भीतर के पिता को असीम संतोष से भर दिया। और अब उसके सामने आमिर खड़ा था... कार्तिक का हम उम्र... उसी के से हालात से जूझता हुआ... बस फर्क ये, कि कार्तिक को तब भी पता था और आज भी पता है कि रात-बिरात जब भी वो घर पहुंचेगा तो अपनी छत के नीचे मां के हाथ का बना गर्म खाना और तैयार बिस्तर उसका इंतज़ार कर रहा होगा। लेकिन आमिर को तो इन बुनियादी ज़रूरतों तक के लिए जूझना पड़ रहा था।

'बच्चे की इस हालत को देखकर क्या बीतती होगी असहाय मां के दिल पर?'...कार्तिक के उस बदहवासी भरे दौर में पत्नी की मनोदशा के गवाह रह चुके तनुज को अपना गला रूंधता सा महसूस हुआ। एकाएक उसके भीतर का

पिता फिर से जिम्मेदारी के उसी एहसास से भर उठा।

'फिलहाल एक्टिंग भूल जाओ!'...अपने इस आदेशात्मक स्वर पर तनुज को खुद ताज्जुब हुआ।

'जी?'...आमिर के चेहरे पर अविश्वास उमड़ पड़ा।

'हां!...एक्टिंग तो कभी भी कर लोगे...पहले इस शहर में अपने पैर जमाओ...कोई ऐसा काम पकड़ो जिसमें नियमित आमदनी होती रहे।'

'लेकिन सर...' - आमिर का चेहरा बुझ सा गया।

'इसी फील्ड में!...इससे बाहर जाने को नहीं कह रहा हूं मैं।'...तनुज जानता था, मृगमरीचिका है ये...एक अंतहीन दौड़ जिसमें शामिल दौड़ाक लस्तपस्त हो जाने के बावजूद न तो दौड़ से बाहर होना चाहता है और न ही आखिरी सांस तक रूकना चाहता है।

'लेकिन सर ऐसा कौन सा काम है मेरे लिए?' - आमिर बौखला सा गया था।'बहुत कुछ है...मेरी मानोगे तो सब चीज़ें आसान होती चली जाएंगी।'

तनुज चाहता था कि फ़िलहाल आमिर भी वो ही राह पकड़े जिस पर चलकर साल भर पहले का बौराया हुआ सा कार्तिक आज एक आत्मविश्वसी नौजवान में तब्दील हो चुका था... वो ही बौराया हुआ सा बदहवास कार्तिक साल भर बाद आमिर की शक्ल में आज एक बार फिर से तनुज के सामने सर झुकाए खड़ा था।

'सुबह घर से निकालोगे तो तुम्हें मंजिल का पता होगा...चाय-नाश्ता-खाना और डेढ़-दो सौ रूपए रोज आने-जाने का मिलेगा ...महीने की तनख्वाह अलग... जान-पहचान का दायरा बढ़ेगा और एक्टिंग का शौक पूरा करने के मौके भी कभी-कभार मिलते रहेंगे। मन लगाकर काम सीखोगे तो बहुत जल्द असिस्टेंट से डायरेक्टर बन जाओगे और तब एक्टिंग बहुत छोटी चीज़ लगने लगेगी तुम्हें।' तनुज की आंखों के सामने कार्तिक का वर्त्तमान जीवंत हो उठा था। आमिर की आंखों में चमक पैदा हुई, हालांकि उस चमक में कहीं अविश्वास का धुंधलका भी था।

'सर मुझे ये काम मिल जाएगा?' - आमिर के स्वर में बेताबी थी।

'क्यों नहीं मिलेगा?...मैं दिलाऊंगा तुम्हें...बस शर्त ये है कि काम में लापरवाही नहीं करोगे।'

'नहीं सर...बिल्कुल नहीं।'

तनुज ने कार्तिक को फोन लगाया। कार्तिक आज उस स्थिति में पहुंच चुका था कि तनुज को किसी सईद की जरुरत नहीं रह गयी थी।

उधर से कार्तिक ने फोन काट दिया।

'लगता है बिज़ी है'... तनुज बड़बड़ाया...आमिर बेसब्री से उसे तकता रहा।

'एक बात कहूं सर?'

तनुज ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसे देखा...

'मैं पांच-छह साल का था जब पापा गुजरे थे...आप बिलकुल मेरे पापा जैसे दिखते हैं सर।' -इस महानगर में पहली बार सहारा देते किसी हाथ को अपनी तरफ बढ़ता देख वो बेहद भावुक हो उठा था।

'ओह! तो इसलिए इस लड़के ने मेरे सामने अपना दिल खोलकर रख दिया?' तभी उसके मोबाईल की घंटी बजी... ये कार्तिक की कॉल थी...

'आपने फोन किया था पापा, टेक चल रहा था इसलिए कट करना पड़ा।' ...कार्तिक ने सफाई पेश की।

'सुन, कोई असिस्टेंट की जगह खाली है क्या तुम्हारे यहां?'

'किसके लिए?'

'है कोई!'...कहता हुआ तनुज आमिर से थोड़ा दूर हट गया। वो आमिर के बारे में कार्तिक को विस्तार से समझाने लगा...

'पापा प्लीज जरा शॉर्ट में...मैं शूट पे हूं...टेक शुरू होने वाला है...।'

कार्तिक को घोड़े पर सवार देखकर तनुज ने उसे चंद शब्दों सब कुछ समझा दिया...आमिर की मां की बीमारी, घर का किराया, पिता का न होना...उसे यकीन था कि ये सब सुनकर सईद की तरह कार्तिक भी कहेगा, 'अभी भेज दो पापा...आज से ही काम शुरू करवा देते हैं।'

'यार पापा आप भी न!...सारी दुनिया का ठेका ले के बैठ जाते हो... यहां तो आपको ऐसे सैकड़ों घूमते मिलेंगे, किस किस को मुंह लगाओगे? ...यार थोड़ा तो प्रैक्टिकल बनो आप।' -कार्तिक के स्वर में झल्लाहट थी। तनुज के पैरों के नीचे से जैसे जमीन खिसक गयी।

'वो झूठ बोल के सिम्पैथी लेना चाह रहा होगा और आप उसके चक्कर में आ गए...भगाओ उसे।'

'लेकिन...!'

'यार टेक शुरू हो रहा है पापा।' - और कार्तिक ने फोन काट दिया।

'अपना वक्त भूल गया ये? इतना जल्द रंग बदलना सीख लिया? लेकिन ये संस्कार तो नहीं दिए थे मैंने इसे?' तनुज के विश्वास को आघात पहुंचा था और उसका आत्मविश्वास लहूलुहान हो गया था।

स्याह चादर पर टंका कांसे का कटोरा उदास था...दड़बों के पहाड़ों में झिलमिलाती रोशनियों के सितारों को मानों स्याह चादर ने अपने आगोश में ले लिया था...मौसम पर तारी गुलाबी ठंडक एकाएक सिहरन में बदल गयी थी...आमिर के चेहरे पर आने वाले खुशगवार वक्त की आहट की दमक थी... उसकी आंखों में अब समंदर नहीं सिर्फ सितारे थे, पूरी शिद्दत के साथ झिलमिलाते उम्मीदों के सितारे...तमाम तकलीफों और जद्दोजहद से मुक्ति के सपनों में डूबा हुआ आमिर एकटक तनुज को ताके जा रहा था...

.....तनुज नजरें चुराने की कोशिश कर रहा था।...अब समंदर उसकी आंखों में था!

गतांक से आगे....

# उड़ती चील का अण्डा

*''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।*

**हुक्के** को धूम्रपान नहीं माना जाता था। इसे अमृत-पान मानते थे। यह चाय की तरह विश्राम और स्वागत का आधार ही था। किसान जो कठिन परिश्रम करता था; हुक्के के बहाने ही सुस्ता लेता था। बैल भी इस बहाने कंधा झाड़ लेते थे। घरों में और बरहे में भी इसी बहाने आग चौबीस घंटे उपलब्ध रहती थी। हुक्का उस समय का सर्व ग्राह्य पेय था। उससे कैंसर आदि के रोग भी नहीं होते थे। फेफड़े भी खराब नहीं होते थे। यह सब बीड़ी-सिगरेट से होता था, क्योंकि इनका धूम खुश्क होता है और हुक्के का तर।

पं. सत्यव्रत का परिवार सर्वसुखी और सम्पन्न था। उनके सुखी और सम्पन्न होने का कारण ब्राह्मणोचित सदाचार का पालन, मर्यादा का पालन, धर्म का पालन और आदर्श जीवनशैली थी। पंडितजी के यहां शान्ति और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण था। सभी जन

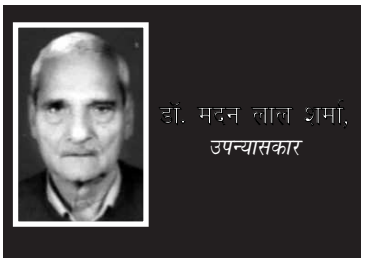


अनुशासित और कर्मठ थे। कलह का नाम नहीं था। संतोष ही उनका धन था और श्रम ही उनकी चर्या थी। इस परिवार के भाव-विचार और कर्म सात्त्विक थे। खान-पान सात्त्विक था। शुद्ध शाकाहारी-दुग्धाहारी-फलाहारी और अन्नाहारी थे ये लोग। आहार और व्यवहार में ये मिताहारी थे। शुद्ध और ताजा भोजन ही करते थे। इन्हें बासी भोजन से खासा परहेज था। ये बासौड़ा भी नहीं मानते थे। कुक्कुर पूजा भी नहीं करते थे। टोना-टोटकों में भी इनका विश्वास नहीं था। वे अंधविश्वास से दूर थे।

पंडित जी के घर में भारी सफाई रहती थी। उनका घर ऋषि-आश्रम की भांति दमकता था। वे गांव और गलियों की सफाई का भी विशेष ध्यान रखते थे। बरसात के दिनों में घरों से दूर मांदों को गांव के बारे से उठवाकर खेतों में पहुंचवा देते थे। कुँओं में लाल दवा डलवा देते थे। हैजे-मलेरिया आदि के टीके लगवा देते थे। सड़े-गले फल व सब्जियों के खाने की मनाही करा देते थे। वे इन बातों को सच्चे सुख का आधार मानते थे।

'पहला सुख निरोगिल काया।
दूजा-सुक्ख हाथ में माया।।
तीजा-सुक्ख पुत्र अधिकारी।
चौथा-सुक्ख कहे में नारी।।'

यह सुख का सार्वभौम सूत्र था। इसे वही प्राप्त कर सकता था जो स्वस्थ-समृद्ध-त्यागी और सच्चरित्र हो।

**...क्रमशः अगले अंक में**

## सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

*माही संदेश*

**प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...**

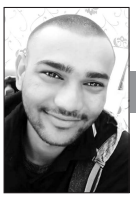

**कबिराज**

*तीरथ बूंदी*
*राजस्थान*

*पंख कान्हा घुमाते बालों में ,*
*रोज आते हैं वो ख्यालों में।।*

*छोड़ दूं बाल या बना लूं मैं,*
*मैं हूँ उलझी हुई सवालों में।।*

*सारी सखियां ही छेड़ती मुझको,*
*क्यों गजब सी चमक है गालों में।।*

*श्याम का रंग जब रमा मुझमें,*
*तब से फीका पड़ा गुलालों में।।*

# युवा कवियों का सुमधुर देश राग

## विख्यात हास्य कवि अरुण जैमिनी सुमधुर काव्य रसधारा 2019 सम्मान से हुए सम्मानित

**70वें** गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में सी स्कीम स्थित मैलो कैफे में आयोजित सुमधुर काव्य महफिल-17 में जयपुर व आस-पास के क्षेत्रों से आए तकरीबन 70 से अधिक कवियों ने शिरकत की। इस बार सुमधुर काव्य महफिल का मुख्य आकर्षण देश के प्रसिद्ध हास्य कवि व सुमधुर साहित्यिक संस्था के संरक्षक अरुण जैमिनी रहे। अरुण जैमिनी ने सभी नवांकुर कवियों को काव्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि सुमधुर काव्य प्रतिभाओं को तराशने का काम कर रहा है। आने वाले समय में यहां से कई प्रतिभाएं देश-विदेश में नाम रोशन करेंगी। सुमधुर के संस्थापक प्रवीण नाहटा, रोहित कृष्ण नंदन, ऋषि दीक्षित व अनुराग सोनी ने सुमधुर साहित्य संस्था की ओर से देश के विख्यात हास्य कवि अरुण जैमिनी को सुमधुर रसधारा 2019 सम्मान प्रदान किया।

हर माह दिया जाने वाला सुमधुर स्टार पोएट ऑफ द मंथ इस बार कबिराज चेतन को हास्य कवि अरुण जैमिनी और सुमधुर संस्था के संस्थापक प्रवीण नाहटा ने प्रदान किया। कार्यक्रम

के दौरान मैलो कैफे के ऑनर नितिन माथुर का सुमधुर संस्था की ओर से प्रशस्ति-पत्र और कलम देकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के आरंभ में हिमांशु सिंघल ने, न शब्द है, न अर्थ है, कुछ इस कदर तू समर्थ है, तू धधकता वो अंगार है, जिसके आगे सब व्यर्थ है, इसके बाद प्रवीणा डोरवाल ने , नमन है उस शहादत को जो भीषण क्रांति लाई, फिर नवीशा कोठारी ने 'आहट तुम्हारी रह जाए सबके दिलों में', यादवेन्द्र आर्य ने 'आपको नमन है दंडवत सैनिकों', भावेश लोहानी ने 'दुश्मनी लाख सही जीत न पाएगा, है इरादा कमजोर तेरा हार जाएगा', विनोद चौधरी ने 'दोस्ती कर ली कलम से प्यार हो गया वतन से, गर मोहब्बत करो तो करो मेरे हिंदुस्तान से', सूर्यप्रकाश उपाध्याय ने 'जिस थाली में खाते हैं उसमें छेद नहीं करते', सोहैल हाशमी ने 'तेरी आंखों से तेरे दिल में उतर जाऊंगा, एक नजर देख नजर भर के मेरी आंखों में', फिर रोहित कृष्ण नंदन ने 'सत्य की भाषा बोले कौन, न्याय भी वर्षों से है मौन' गीत सुनाया, अभिलाषा पारीक ने 'वो न थे हिंदू, वो न थे मुस्लिम, वो सब थे हिंदुस्तानी', इसके बाद सतपाल सोनी ने 'ये मस्तक कट तो सकता है मगर अब झुक नहीं सकता', कबिराज चेतन ने 'पंख कान्हा घुमाते बालों में, रोज आते हैं वो खयालों में' सुनाया, इसके बाद सोनू श्रीवास्तव ने 'एक सितारा था चमकता था अकेला कभी', अनुराग सोनी ने 'मेरे देश का हर नर नारी हिंद का शिल्पकार हो' सुनाई इसके बाद सोफिल डांगी, संजय शिल्प, अयूब बिस्मल, एजाज उल हक शिहाब, धनराज दाधीच सहित 70 कवियों ने देश भक्ति के रंग में रंगा अपना काव्य पाठ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में प्रवीण नाहटा ने सुमधुर संस्था की ओर से आगन्तुक कवियों को धन्यवाद दिया। काव्य महफिल का संचालन कबिराज चेतन ने किया।

# 'काव्या' काव्य संध्या एवं साहित्यकार पत्रकार सम्मान समारोह आयोजित

**जयपुर।** साहित्य, संस्कृति और दर्शन के उत्थान के लिए समर्पित अन्तरराष्ट्रीय 'काव्या' फाउण्डेशन के तत्वावधान में 23 जनवरी को यहां पिंकसिटी प्रेस क्लब में प्रदेश के 15 प्रतिष्ठित साहित्यकारों और पत्रकारों का उनकी सेवाओं के लिए सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस अवसर पर कहा कि सात समुंदर पार से काव्य संस्था के अध्यक्ष डॉ. परिक्षित सिंह साहित्यकारों, कवियों और पत्रकारों के लिए जो ये कार्यक्रम करते हैं इससे उनका इन सबके लिए प्रेम साफ छलकता है। उन्होंने कहा कि मैं साहित्यकार, कवियों के हमेशा साथ रहा हूं वे जैसा भी सहयोग चाहेंगे मैं उनके साथ हूं।

ऊर्जा एवं कला-संस्कृति मंत्री डॉ. बीडी कल्ला ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। वरिष्ठ पत्रकार वीर सक्सेना ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी फारूख आफरीदी कार्यक्रम संयोजक रहे। इकराम राजस्थानी ने मंच संचालन किया।

इस अवसर पर ख्यातनाम कवियों और शायरों ने हिन्दी, राजस्थानी कविताओं और उर्दू शायरी के माध्यम से सामाजिक सरोकारों से जुड़ी अपनी उम्दा रचनाएं सुनाकर श्रोताओं का मन मोह लिया। काव्य पाठ करने वालों में कवि वीर सक्सेना, शायर लोकेश कुमार सिंह साहिल, हरीश करमचंदानी, सवाई सिंह शेखावत, विनोद, इकराम राजस्थानी, रासबिहारी गौड, डॉ. परीक्षित सिंह, कैलाश मनहर, कवयित्री अजंता देव, नीलिमा टिक्कू, वीना चैहान आदि प्रमुख रहे।

काव्या फाउण्डेशन के अध्यक्ष, कवि डॉ. परिक्षित सिंह ने सामाजिक दर्शन, विचार और मनुष्य के संघर्षों के विविध आयामों के साथ बेहतर भविष्य की संकल्पना को लेकर अपनी कविताएं प्रस्तुत की।

इस अवसर पर भाषा साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में अनवरत सेवाओं के साथ योगदान करने वाली हस्तियों को सम्मानित किया गया।


## 'माही संदेश' में विज्ञापन दें

**एक** स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

### 'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

| | |
|---|---|
| *पत्रिका का कवर पृष्ठ* | ₹ 50,000 |
| *सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन* | ₹ 20,000 |
| *पीछे का कवर रंगीन* | ₹ 40,000 |
| *पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन* | ₹ 20,000 |
| *अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ* | ₹ 6,100 |
| *अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ* | ₹ 3,100 |

**संपादक**
**माही सन्देश**
*खाता संख्या*
**37802854186**
IFSC: SBIN0032385
**भारतीय स्टेट बैंक**
**शाखा:** कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
**पेटीएम-**9887409303
**दूरभाष-** 9887409303

# माही संदेश

## मासिक पत्रिका के सदस्य बनें

**: कार्यालय :**

**माही संदेश,** 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

### सदस्यता शुल्क

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000

चेक 'Mahi sandesh' (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर अतिरिक्त देय डाकखर्च शुल्क भेजें।

भवदीय,
**'रोहित कृष्ण नंदन'**
*संपादक*
*'माही सन्देश'*

**खाता संख्या :** 37802854186
**IFSC:** SBIN0032385
**भारतीय स्टेट बैंक**
**शाखाः** कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
**पेटीएम-**9887409303

**माही संदेश मासिक पत्रिका से प्रशिक्षु पत्रकार/मार्केटिंग मैनेजर/ग्राफिक डिजाइनर रूप में जुड़कर समाज में अपनी पहचान बनाने का सुनहरा अवसर**

पत्रकारिता में अध्ययनरत छात्र-छात्राएं और सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को प्राथमिकता

**सम्पर्क : संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303**
**email-mahisandesheditor@yahoo.com**

# तस्वीर बोल उठी-11

*इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 फरवरी) में प्रकाशित किया जाएगा-*

*तस्वीर : विष्णु गोयल*

**तस्वीर बोल उठी-10**

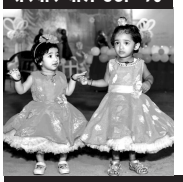

### *रचना भेजने का पता संपादक*

**माही संदेश,** 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
**email-mahisandesh31@gmail.com**

**तस्वीर बोल उठी-10 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।**

हम मां-पापा की परियां हैं
अधरों का स्मित बना रहे,
जग के विश्वास का है संबल
ज्यूँ जल की धारा हो निर्मल

**डॉ. कविता माथुर**
जयपुर, (राजस्थान )

**माही संदेश मासिक पत्रिका के सदस्य बनें और आरडी ब्यूटी पार्लर की सेवाओं पर 50 प्रतिशत की छूट पाएं**

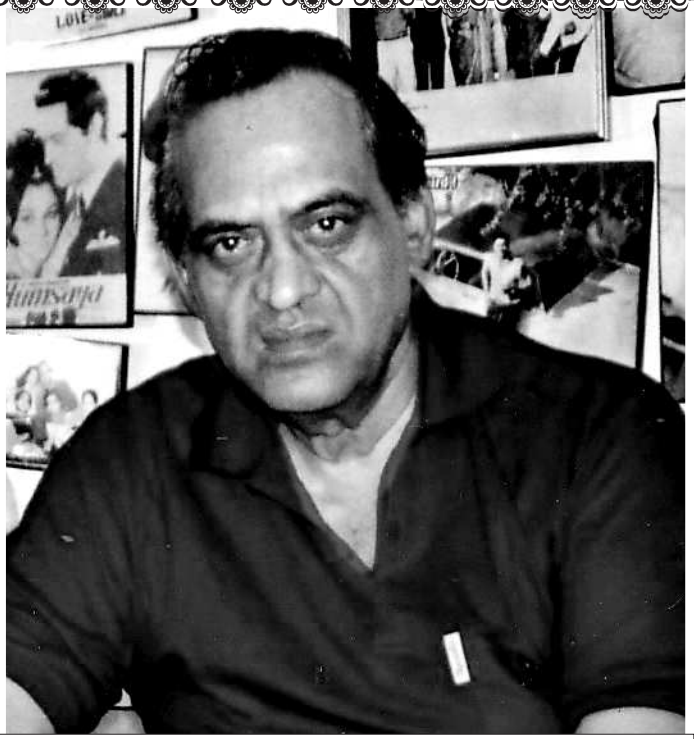

# 'फिर वो ही दिल लाया हूं'
# जॉय मुकर्जी

**शिशिर कृष्ण शर्मा**
*फिल्म इतिहासकार*
*मो. 9821394486*

स्टार अभिनेता अशोक कुमार के भांजे निर्माता शशधर मुकर्जी के बेटे 'फिल्मालय स्टूडियो' के साझीदारों में से एक...अपने दौर के सुपरस्टार...और इन सबसे बढ़कर मेरे पसंदीदा संगीतकार ओ.पी.नैयर की 'एक मुसाफिर एक हसीना', 'फिर वोही दिल लाया हूं' और 'दिल और मोहब्बत' जैसी सुपर हिट फिल्मों के नायक...जाहिर है मेरे जहन में जॉय मुकर्जी की छवि एक 'लार्जर दैन लाईफ' स्टार की थी। यही वजह थी कि 'साप्ताहिक सहारा समय' के अपने कॉलम 'क्या भूलूं क्या याद करूं' में इंटरव्यू के लिए जॉय मुकर्जी को फोन करते समय मैं थोड़ा घबराया हुआ सा था कि पता नहीं वो सीधे मुंह बात भी करेंगे या नहीं। लेकिन फोन पर उनके साथ हुई संक्षिप्त सी बातचीत ने उनके प्रति मेरी तमाम धारणाओं को सिरे से खारिज कर दिया। उनकी आवाज में खासी गर्मजोशी थी और बिना किसी ना-नुकुर के उन्होंने मुझे मिलने का समय दे दिया था।

नियत दिन और समय पर मैं अपने कैमरामैन के साथ अंधेरी (पश्चिम) के लोखण्डवाला सर्किल के पास शास्त्री नगर के मुहाने पर स्थित 'जॉय आर्ट गैलरी' पर पहुंच गया था। ये एक दुकान थी जो सीमित समय की प्रदर्शनियों या सामान की सेल इत्यादि के लिए किराए पर दी जाती थी। दुकान के एक हिस्से में पार्टिशन के पीछे जॉय मुकर्जी का ऑफिसनुमा कमरा था जिसकी दीवारों पर उनकी फिल्मों के पोस्टर और तस्वीरें लगी हुई थीं। जॉय मुकर्जी अपना दिन इसी ऑफिस में बिताते थे। बेहद दोस्ताना अंदाज में उन्होंने अपनी निजी और व्यावसायिक जिंदगी के बारे में खुलकर बातचीत की, लेकिन उनके भीतर का उद्वेलन और उदासी मुझसे छिप नहीं पायी। और इसकी वजह भी अंततः सामने आ ही गयी। बातचीत की शुरूआत उन्होंने जिस बात से की थी, वो थी - 'मेरी जिंदगी में 'बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख' वाली बात पूरी तरह से फिट बैठती है।'

जॉय मुकर्जी के पिता शशधर मुकर्जी मूलतः झांसी के एक समृद्ध बंगाली परिवार के थे। साल 1933 में हिमांशु राय और देविका रानी ने लंदन से आकर मुम्बई के मालाड (पश्चिम) में 'बॉम्बे टॉकीज़' की नींव रखी तो शशधर मुकर्जी झांसी से मुम्बई चले आए। जॉय मुकर्जी के अनुसार उनके पिता बतौर साऊण्ड रेकॉर्डिस्ट 'बॉम्बे टॉकीज' से जुड़े थे, लेकिन उनकी मेहनत और लगन से प्रभावित होकर हिमांशु राय ने जल्द ही उन्हें कम्पनी में पार्टनर बना लिया था। उन्हीं दिनों शशधर मुकर्जी ने अपने साले अशोक कुमार को भी मुम्बई बुलाकर 'बॉम्बे टॉकीज' में लैब असिस्टेंट की नौकरी पर रखवा दिया था। आगे चलकर अशोक कुमार हिंदी सिनेमा के एक मशहूर अभिनेता बने।

24 फरवरी 1939 को झांसी में जन्मे जॉय मुकर्जी का पालन-पोषण और पढ़ाई-लिखाई मुम्बई में हुई। जॉय के शब्दों में - 'जब मैंने होश सम्भाला तो उस वक्त तक मेरे कई करीबी रिश्तेदार फिल्मों में अपनी जगह बना चुके थे। लेकिन फिल्मों में मेरी जरा भी

दिलचस्पी नहीं थी। बल्कि मुझे तो बचपन से ही खुद को फिल्मी परिवार का बताते हुए संकोच होता था। मेरे चचेरे भाई निर्देशक राम मुकर्जी फिल्म 'हम हिंदुस्तानी' बना रहे थे। इस फिल्म के निर्माता मेरे पिता थे और उनकी कम्पनी 'फिल्मालय' के बैनर में बनने वाली ये दूसरी फिल्म थी। साल 1959 में प्रदर्शित हुई 'फिल्मालय' की पहली फिल्म 'दिल देके देखो' बहुत बड़ी हिट साबित हुई थी। फिल्म 'हम हिंदुस्तानी' के नायक सुनील दत्त के छोटे भाई की भूमिका के लिए राम मुकर्जी किसी नए लड़के की तलाश में थे। मैं उन दिनों कॉलेज में पढ़ रहा था। मेरी दिलचस्पी खेलकूद में थी और मेरा ज्यादातर समय कुश्ती, टेनिस और फुटबॉल खेलने में बीतता था। अचानक एक रोज राम ने मुझसे 'हम हिंदुस्तानी' की वो भूमिका करने को कहा लेकिन चूंकि फिल्मों के लिए मैं मानसिक तौर पर तैयार नहीं था इसलिए मैंने साफ इंकार कर दिया।'

जॉय के मुताबिक राम मुकर्जी ने उनसे कहा, 'अगर मैं तुम्हें तुम्हारी पॉकेटमनी पन्द्रह रूपए की जगह दो सौ रूपए दूं तो?' ये सुनते ही जॉय ने पैसे के लालच में फिल्म में काम करने के लिए हामी भर दी। लेकिन उस दौर की कोई भी मशहूर हिरोईन जॉय के साथ काम करने को तैयार नहीं हुई। मजबूरन जॉय की हिरोईन की भूमिका में हेलन को लेना पड़ा जो एक डांसर के तौर पर स्थापित हो जाने के बाद अब एक अभिनेत्री बनने के लिए संघर्ष कर रही थीं।

जॉय की अगली फिल्म 'लव इन शिमला' थी। ये फिल्म भी 'फिल्मालय' के ही बैनर में बनी थी। इस फिल्म के निर्देशक आर.के.नैयर थे और इसमें जॉय की हिरोईन की भूमिका 'फिल्मालय एक्टिंग स्कूल' में अभिनय सीख रहीं साधना को दी गयी। (साधना इससे पहले साल 1958 में बनी सिंधी फिल्म 'अबाना' में बतौर सहनायिका काम कर चुकी थीं, जिसकी नायिका शीला रमानी थीं।) जॉय के अभिनय करियर को लेकर उनके पिता शशधर मुकर्जी ज्यादा आश्वस्त नहीं थे और वो नहीं चाहते थे कि जॉय अभिनय में हाथ आजमाएं। लेकिन फिल्म 'लव इन शिमला' के लेखक आगाजान कश्मीरी शशधर मुकर्जी से सहमत नहीं थे। उन्हें जॉय मुकर्जी में एक भावी स्टार नजर आ रहा था। 'लव इन शिमला' जॉय मुकर्जी को आगाजान कश्मीरी की जिद पर ही मिली थी। आगाजान कश्मीरी सही साबित हुए। 'लव इन शिमला' को दर्शकों ने बहुत पसंद किया।

जॉय मुकर्जी के शब्दों में, 'फिल्मों के प्रति मेरे नजरिए में अभी भी कोई बदलाव नहीं आया था इसलिए मैंने अपने किसी भी दोस्त को इन फिल्मों के बारे में बताया नहीं था। मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि का पता भी उन्हें तब चला था जब उन्होंने फिल्मों के पोस्टरों पर मेरा चेहरा देखा। 'हम हिंदुस्तानी' और 'लव इन शिमला', ये दोनों ही फिल्में 1960 में प्रदर्शित हुई

थीं। 'लव इन शिमला' एक लो बजट फिल्म थी लेकिन ये इतनी कामयाब हुई कि मैं रातोंरात स्टार बन गया। मैंने किसी तरह थर्ड क्लास में बी.ए.पास किया और फिर फिल्मों में व्यस्त हो गया। मुझे बिन मांगे ही मोती मिल गए थे।'

जॉय मुकर्जी वैजयंतीमाला के फैन थे। वैजयंतीमाला के साथ काम करने का उनका सपना के. अमरनाथ की फिल्म 'इशारा' में पूरा हुआ जो साल 1964 में प्रदर्शित हुई थी। उस दौर में जॉय मुकर्जी ने 'उम्मीद', 'एक मुसाफिर एक हसीना', 'फिर वोही दिल लाया हूं', 'जिद्दी', 'जी चाहता है', 'इशारा', 'दूर की आवाज़', 'आओ प्यार करें', 'बहू बेटी', 'लव इन टोक्यो', 'ये जिंदगी कितनी हसीन है', 'साज और आवाज', 'शागिर्द', 'एक कली मुस्काई', 'दिल और मोहब्बत' और 'एक बार मुस्कुरा दो' जैसी कई बड़ी और हिट फिल्में कीं। जॉय के शब्दों में, 'मेरी फिल्में लगातार हिट हो रही थीं। मेरा आत्मविश्वास बुलन्दियों पर था। मुझे लगा, मैं खुद ही निर्माता-निर्देशक क्यों न बन जाऊं। मैंने माला सिन्हा और शर्मिला टैगोर को साईन किया और फिल्म 'हमसाया' का निर्माण आरम्भ कर दिया। हीरो मैं खुद ही था।'

साल 1968 में प्रदर्शित हुई 'हमसाया' जॉय की बेहद महत्वाकांक्षी फिल्म थी। इस फिल्म के लिए उन्होंने बाहर की कई फिल्मों के ऑफर ठुकराए। इसके निर्माण पर खुले हाथ से पैसा खर्च किया। संगीत की जिम्मेदारी अपने पसंदीदा संगीतकार ओ.पी.नैयर को दी। फिल्म के तमाम गीत सुपरहिट हुए लेकिन फिल्म नहीं चल पाई।

(कहते हैं, शूटिंग के दौरान माला सिन्हा और शर्मिला टैगोर के बीच हुए झगड़ों ने फिल्म को बहुत नुकसान पहुंचाया। इन दोनों के बीच फिल्म के सेट पर हुई हाथापाई और माला सिन्हा द्वारा शर्मिला टैगोर को थप्पड़ मारे जाने की खबरें भी अक्सर सुनने में आती हैं।)

जॉय मुकर्जी कहते थे, 'फिल्म 'हमसाया' ने मुझे बहुत आर्थिक नुकसान पहुंचाया। इसके बावजूद मैंने हिम्मत बटोरते हुए कुछ समय बाद फिल्म 'लव इन बॉम्बे' का निर्माण शुरू किया। इस फिल्म में मेरी नायिका वहीदा रहमान थीं और संगीत शंकर जयकिशन का था। लेकिन जब तक फिल्म बनकर तैयार होती, नायक-नायिकाओं की नयी जमात मैदान में आ धमकी। साल 1971 में पूरी हुई ये फिल्म बिकी ही नहीं और आज भी डिब्बे में बन्द पड़ी है। जो मैंने चाहा था, वो मुझे मांगने पर भी नहीं मिला और जो कुछ मेरे हाथ में था, वो भी मैंने खो दिया। मैं कर्जे के भारी बोझ के नीचे दब गया। राजेश खन्ना और जीनत अमान की मेरे द्वारा निर्देशित फिल्म 'छैला बाबू' को जरूर अपवाद के तौर पर सफल फिल्मों में रखा जा सकता है। ये फिल्म साल 1977 में प्रदर्शित हुई थी।'

(जॉय मुकर्जी द्वारा निर्मित और निर्देशित फिल्म 'लव इन बॉम्बे' 42 सालों तक डिब्बे में बन्द रहने के बाद 2 अगस्त 2013 को प्रदर्शित हुई। लेकिन जॉय मुकर्जी की किस्मत में इस फिल्म को प्रदर्शित होते देखना नहीं था। फिल्म उनके निधन के करीब डेढ़ साल बाद प्रदर्शित हुई थी।)

'हमसाया' और 'लव इन बॉम्बे' के निर्माण और निर्देशन की जिम्मेदारियों और फिर असफलताओं की वजह से 1970 का दशक आते आते जॉय मुकर्जी का स्टारडम खत्म हो चुका था। ऐसे में कर्ज चुकाने के लिए उन्हें मजबूरन 'एहसान', 'पुरस्कार', 'मुजरिम', 'आग और दाग', 'कहीं आर कहीं पार' जैसी 'बी' और 'सी' ग्रेड फिल्मों में काम करना पड़ा। 'जो कुछ मेरे हाथ में था, वो भी मैंने खो दिया' कहते हुए उनके भीतर का उद्वेलन और उदासी उनके चेहरे और आवाज में पूरी तरह झलक पड़े थे।

जॉय मुकर्जी ने करीब 32 फिल्में बतौर नायक कीं। अपने करियर की आखिरी दो फिल्मों 'फूलन देवी' और 'इंसाफ मैं करूंगा' में वो खलनायक थे। ये दोनों ही फिल्में साल 1985 में प्रदर्शित हुई थीं। पिता शशधर मुकर्जी और मां सती रानी के 5 बेटों और 1 बेटी के बीच जॉय दूसरे नम्बर पर थे। अभिनेता अशोक कुमार, अनूप कुमार और किशोर कुमार सती रानी के भाई और जॉय के मामा थे। 'मुनीमजी', 'पेईंग गेस्ट' 'लव मैरिज', 'अप्रैल फूल', 'शर्मिली' जैसी फिल्में देने वाले निर्माता-निर्देशक सुबोध मुकर्जी जॉय के चाचा थे। फिल्म 'हम हिंदुस्तानी' के निर्देशक राम मुकर्जी जॉय के ताऊ के बेटे थे। अभिनेत्री रानी मुकर्जी इन्हीं राम मुकर्जी की बेटी हैं। 'सम्बन्ध' और 'एक बार मुस्कुरा दो' जैसी फिल्मों के नायक देव मुकर्जी जॉय के छोटे भाई हैं। हिट फिल्म 'वेक अप सिड' के निर्देशक अयान मुकर्जी देव मुकर्जी के बेटे और निर्देशक आशुतोष गोवारीकर देव के दामाद हैं। अभिनेत्री तनुजा जॉय के एक अन्य भाई शोमू की पत्नी और काजोल शोमू की बेटी हैं। (तनुजा देव मुकर्जी और जॉय मुकर्जी के साथ साल 1972 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'एक बार मुस्कुरा दो' में बतौर हिरोईन काम कर चुकी थीं।)

जॉय मुकर्जी के परिवार में पत्नी नीलम के अलावा दो बेटे सुजॉय और मोंजॉय और एक बेटी सिमरन हैं। सुजॉय 1990 के दशक की शुरूआत में 'महबूब मेरे महबूब', 'हम हैं कमाल के', और 'प्यार प्यार' जैसी फ़िल्मों में बतौर हीरो नजर आए थे।

जॉय मुकर्जी साल 2009 में दूरदर्शन पर प्रसारित हुए धारावाहिक 'ऐ दिले नादां' में एक अहम भूमिका में नजर आए थे। इस धारावाहिक का निर्माण उनके बेटे सुजॉय ने किया था।

जॉय मुकर्जी का निधन 9 मार्च 2012 को 73 साल की उम्र में मुम्बई में हुआ।

## तीन प्रतिभागियों को मिलेगा 100 का पेटीएम कैश

Paytm

माही संदेश राष्ट्रीय मासिक पत्रिका पढ़िए और दीजिए आसान से सवाल का सही जवाब, सवाल का सही जवाब माही संदेश पत्रिका के अंदर ही है, बस ध्यान से पढ़िए माही संदेश का फरवरी 2019 अंक

फरवरी अंक का सवाल नं.-1

फिल्म अभिनेता जॉय मुकर्जी का जन्म कब हुआ था।

(अ) 24 फरवरी 1939 (स) 21 मार्च 1939
(ब) 22 जनवरी 1940 (द) 9 मार्च 1940

अपने जवाब हमें व्हाटसएप, मैसेज या ईमेल कीजिए जवाब भेजने के लिए सवाल नंबर और उसका जवाब टाइप कर भेजिए

सम्पर्क : संपादक, माही संदेश,
मो. 9887409303
email-mahisandesh31@gmail.com

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर




सेवा में,

प्रेषक :

**संपादक (माही संदेश)**

50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**